**** श्रीश्री गौरगदाधरौ जयतः ****

विषय सूची

पृष्ठा	विषय	श्रीचैतन्यचरितामृत	
१—	शिक्षाष्टक	अ०	२०
५—	युगधर्म (हरेर्नाम)	आ०	१७
,,	कलिका	म०	११
,,	गृहस्थ का कर्त्तव्य		
,,	श्रीरामानन्द, तथा श्रीसत्य		
	राज खान के प्रति	म०	१५
,,	कुलीन ग्राम वासी	म०	१६
,,	श्रीकूर्म के प्रति	म०	१
,,	श्री कुष्ठ	म०	१
६	श्रीनवद्वीप वासी	म०	३
,,	वैष्णवापराध		
	श्रीचापाल गोपाल	आ०	१७
,,	श्रीरूप गोस्वामी	अ०	१९
,,	मातृभक्तिमाताकेप्रति	म०	३
७	श्रीदामोदर के प्रति	म०	१५
,,	पितामाता की सेवा		
	रघु नाथ भट्ट के प्रति	अ०	१३

सङ्गणकसंस्करणं दासाभासेन हरिपार्षददासेन कृतम्

पृष्ठा	विषय	श्रीचैतन्यचरितामृत	
,,	श्रीवृन्दावन दास	अ०	१३
८	श्रीरूप के प्रति	अ०	१
,,	श्रीजगदानन्द के प्रति	अ०	१३
,,	निष्ठा	अ०	४
,,	मर्यादापालन		
९	श्रीसनातन के प्रति	अ०	४
,,	श्रीशिवानन्द के प्रति	म०	१५
,,	कुलीन ग्रामी के प्रति	म०	१५
,,	नाम की महिमा		
,,	श्री तपन मिश्र के प्रति	आ०	१६
,,	श्रीप्रकाशानन्द के प्रति	म०	१५
१०	श्रीसुवुद्धिराय के प्रति	म०	१५
,,	श्रीसनातन के प्रति	अ०	४
,,	श्रीकृष्णनाम--श्रीकृष्णमन्त्र	आ०	७
,,	नाम साधन की रीति	आ०	१७
११	साधन भक्ति	म०	९
१२	श्रीभगवत् प्राप्तिका उपाय	ग्रा०	७
,,	परम पुरुषार्थ	म०	६
,,	शुद्धा भक्ति	म०	१९
१३	वैष्णव का लक्षण	म०-१५-१६	
,,	वैष्णव का आचार	आ०	१२
१४	,, ,, वेश	म०	२०

पृष्ठा	विषय	श्रीचैतन्यचरितामृत	
१४	एकादशी	आ०	१५
,,	विषय त्याग श्रीरामानन्द के प्रति		
,,	श्रीरघुनाथ के प्रति	अ०	६
,,	श्रीरघुनाथदास के प्रति		
१५	काशी नाथके प्रति-	अ०	११
,,	श्रीरूप, सनातन	म०	१९
,,	श्रीसनातन	म०	२९
,,	श्रीस्वरूप	अ०	६
,,	युक्त वैराग्य	म०	१६
१६	भजनीय कौन है ९	म०	१५
,,	सन्न्यासी का धर्म		
,,	भक्त वृन्द के प्रति	म०	३
,,	श्रीसार्वभौम के प्रति	म०	११
,,	छोट हरिदासके सम्बन्ध में	अ०	२
,,	श्रीसनातन के प्रति	अ०	४
१७	श्रीअद्वैताचार्य	अ०	७
,,	श्रीगोविन्द	अ०	६
,,	श्रीरघुनाथ	अ०	६
,,	श्रीगोविन्द	आ०	१३
१८	सन्न्यास की महिमा	आ०	१५
,,	काम एवं प्रेम	अ०	४
,,	गोपीभाव-	म०	८

पृष्ठ	विषय	श्रीचैतन्यचरितामृत	
,,	निरपेक्षता-	अ० ३-म०	७
,,	इष्ट नाम ग्रहण-	अ०	७
१९	श्रीधरस्वामीके सन्दर्भ में	अ०	७
,,	श्रीकृष्ण नाम अर्थ-	अ०	७
२०	श्रीईश्वर तत्त्व-		
,,	अचिन्त्य·	आ०	७
,,	अप्राकृत विग्रह-	म०	६
,,	सशक्तिक		
२१	सविशेष	म०	१८
,,	श्रीकृष्ण शक्ति-	म०	२०
२२	श्रीकृष्ण स्वरूप-	म०	२०
२३-	श्रीकृष्णका त्रिविध प्रकाश	म०	२०
,,	श्रीकृष्ण किशोर धर्मी	,,	२०
२३	श्रीकृष्ण एवं श्रीनारायण में अभेद—	,,	९
,,	भगवत्ता	अ०	९
२४	श्रीहरि ब्रह्म	म०	२४
,,	श्रीकृष्ण नाम, स्वरूप, विग्रह	,,	१७
,,	श्रीविग्रह श्रीप्रकाशानन्द के प्रति	,,	६
२५	श्री विग्रह सेवा श्रीगदाधर के प्रति	,,	१६

पृष्ठा	विषय	श्रीचैतन्यचरितामृत	
२५	जीव ईश्वर में भेद		
	मायाधीश मायावश-	म०	६
	व्याप्य व्यापक-	,,	१०
,,	भट्टाचार्य के प्रति	,,	१८
२६	श्रीप्रकाशानन्द के प्रति	,,	२५
,,	जीव स्वरूप-अणुशक्ति	आ०	७
,,	सूक्ष्म	म०	१९
,,	विभिन्नांश	,,	२२
,,	भेदाभेद प्रकाश	,,	२०
२७	जीवका बन्धन हेतु	,,	२०-२२
,,	उद्धार का उपाय—		
,,	श्रीकृष्ण भजन	,,	२२
,,	शरणागति	म०	२२
,,	साधुसङ्ग	,,	२२
२८	भक्ति का प्राधान्य		
	उद्धार का उपाय	,,	२२
,,	श्रीरूप के प्रति-	,,	१९
२९	श्रीसनातन के प्रति	,,	२०
३०	श्रद्धा	म०	२२
,,	शुद्धा भक्ति	म०	१९
,,	शुद्धाभक्ति का लक्षण	म०	१९
,,	साधन का अन्तराय-	म०	१९

पृष्ठा	विषय	श्रीचैतन्यचरितामृत	
३०	त्याज्य क्या है ?	म०	२२
,,	आत्म समर्पण	म०	२२
३१	श्रीकृष्ण प्राप्तिका उपाय		
,,	श्रीसनातन के प्रति	,,	२०
,,	श्रीकाशी वासी के प्रति	आ०	७
,,	पाठान के प्रति	म०	१८
,,	श्रीसनातन के प्रति	अ०	४
३२	साधन का कम		
	श्रीरामानन्द के प्रति	म०	८
३३	श्रीसनातन के प्रति	म०	२३
३४	श्रीराधातत्त्व	म०	८
,,	श्री गोपीतत्त्व	म०	८
,,	माया	म०	२०
३५—	नित्यलीला	म०	२०
,,	प्रणव	आ०	७
	प्रणव से महावाक्य-		
	ईश्वर की मूर्त्ति-	म०	६
,,	विवर्त्त	आ०	७
	जीव शरीर में	म०	६
३६	जगत्	म०	६
,,	साधन भक्ति	म०	२२
,,	वैधी भक्ति	म०	२२

पृष्ठा	विषय	श्रीचैतन्यचरितामृत	
३७	पञ्चाङ्ग साधन	म०	२२
३८	भक्ति की महिमा	म०	२२
,,	भावाङ्कुर का लक्षण	म०	२३
,,	रागानुगा भजन	म०	८
३९—	मधुर भाव में भजन—		
४०	श्रीसनातन के प्रति	म०	२२
४१	विभिन्न भक्तोंका लक्षण	म०	१९
४२	उत्तम भक्तका लक्षण	म०	८
,,	भक्त का देह	अ०	४
,,	श्रीरास लीलाका श्रवण	अ०	५
,,	श्रीमन्दिर का चक्र को प्रणाम		
,,	श्रीहरिदास के प्रति	म०	११
४३	दैन्य श्रीसनासनके प्रति	म०	१६
,,	दारु ब्रह्म श्रीसार्वभौमके प्रति	म०	१५
,,	जलब्रह्म श्रीवाचस्पतिके प्रति	म०	१५
,,	श्रेष्ठ क्या है ?	म०	८
,,	श्रीरघुनाथ उपाध्यायके प्रति	म०	१९
४५	विधि व्यवस्था	म०	२४
४६	श्रीईश्वर की कृपा	म०	१०
४७	कृपा का फल	म०	११
	,, ,, ,,	म०	२२
,,	भक्ति का प्राधान्य	म०	२२

पृष्ठा	विषय	श्रीचैतन्यचरितामृत	
४७	तत्त्व	म०	१७
,,	गुरु कौन ?	म०	१५
,,	अधिकार विचार	म०	१५
४८	आर्त्ति	अ०	१४
,,	हाहा कृष्ण	अ०	१२
४९	काँहा करों	अ०	१७
	प्रभु कहे	अ०	१९
४९	कर्म फल	आ०	२
,,	श्रीगौराङ्ग तत्त्व	म०	८
,,	सेवा	अ०	१०
५०	समुद्र	अ०	११
,,	श्रीजगन्नाथ दर्शन	अ०	१४
,,	श्रीव्रज	अ०	१
,,	श्रीअधरामृत	अ०	१६
५१	सात्त्विक सेवा	अ०	६
,,	श्रीकृष्णकथामृत	म०	९
,,	ब्रह्म संहिता	म०	९
५२	पट्ट डोरी	म०	१४
,,	भक्त स्वभाव	अ०	३
,,	श्रीरथयात्रा	म०	१४

आ०, आदि, म०, मध्य, अ०,—अन्त्य ।

पृष्ठा	विषय	श्रीचैतन्यभागवत	
५३—	मातृभक्ति	म०	२७
	,, ,,	अ०	६
५४	गृहस्थका कर्त्तव्य		
,,	अतिथि की सेवा	आ०	१२
,,	ज्येष्ठ भ्राता की सेवा	अ०	५
,,	वधूका कर्त्तव्य	आ०	१२
५५	प्रदक्षिणा	अ०	१०
,,	गङ्गा की महिमा	अ०	१
५६	युगधर्म-नाम-	आ०	१२
	तपनमिश्र के प्रति-		
,,	श्रीगदाधर के प्रति		
	कृष्ण भक्ति—	म०	१
५७	श्रीकृष्ण नाम	म०	१
,,	छात्रगण के प्रति	म०	,,
,,	श्रीकृष्ण ही भजनीय है	,,	,,
,,	भक्ति का प्रभाव	,,	,,
,,	(माता के प्रति)		
,,	छात्रगण के प्रति-		
	(नामोपदेश)	,,	,,
५८	धातु	म०	१
५९	श्रीकृष्णशक्ति धातु	,,	,,
६०	श्रीकृष्ण नाम का प्रभाव	,,	१९
,,	नाम मन्त्र	म०	२३

पृष्ठा	विषय	श्रीचैतन्यभागवत	
६१	श्रीकृष्ण ही भजनीय है		
,,	श्रीनित्यानन्द एवं श्रीहरिदास के प्रति—	म०	१३
,,	वोल कृष्ण गाओ कृष्ण भज कृष्ण नाम—	म०	२७
,,	वोल कृष्ण भज कृष्ण शुन कृष्ण नाम—	अ०	३
६२	उच्च कीर्त्तन	आ०	१४
	कीर्त्तन	म०	८
,,	दिग्विजयी के प्रति श्रीकृष्ण भजन	अ०	११
६३	शिष्य के प्रति	म०	१
	भक्ति का प्राधान्य	म०	१०
,,	रजक के सम्वन्ध में	म०	१०
	शरणा गति	म०	२३
६४	भक्ति का श्रैष्ठत्व	म०	२३
,,	कुशल	अ०	९
६५	प्रभु वोले	अ०	९
,,	श्रीजगन्नाथ दर्शन	अ०	२
,,	आर्त्ति (जातिकुल)	म०	१०
	प्रभु वोले	म०	१
,,	कोथा कृष्ण	म०	१
,,	कृष्णरे वापरे	आ०	१५

पृष्ठा	विषय	श्रीचैतन्यभागवत	
६५	कोथा कृष्ण	म०	१
,,	कृष्ण वलि	म०	१
	कृष्णरे	म०	१
,,	त्याज्य क्या है ?	आ०	१४
	श्रीरूप सनातनके प्रति	अ०	९
६६	त्याज्य क्या ? अहङ्कार-	अ०	११
	,, ,, शठता	आ०	१३
,,	निष्ठा	अ०	४
६७	मर्य्यादा	म०	२०
,,	वैष्णववेश तिलकधारण-	आ०	१३
,,	विप्र पादोदक	आ०	१५
,,	निरपेक्षता	म०	३
,,	कर्मफल	म०	२५
६७	लक्षेश्वर	अ०	९
६८	श्रीतुलसी	अ०	८
,,	श्रीभागवत धर्म	म०	५
६९	सम दृष्टि--	अ०	३
,,	भक्त पूजा	अ०	६
,,	श्रीअद्वैतादि के प्रति	म०	१९
	अभेद दृष्टि	अ०	४
७०	महत् का आचरण	आ०	६
,,	दुष्कृति जन	अ०	६
,,	सिद्ध वैष्णव	अ०	?

पृष्ठा	विषय	श्रीचैतन्यभागवत	
७०	सवे इथे—	अ०	६
	वैष्णव (येतेकुले)	म०	१०
७१	वैष्णव, श्रीचापाल		
,,	गोपाल के प्रति	अ०	४
७२	वैष्णव की जाति नहींहै	अ०	१०
	अपराध सेवास्थान में	म०	५
७३	श्रीमाधाह के प्रति—	म०	१३
,,	श्रीनिवास के प्रति-	म०	२२
,,	श्रीचापाल गोपाल		
,,	के प्रति	अ०	४
७७	अपराध खण्डन	अ०	३
७४	अपराध भक्त के निकट	अ०	१०
,,	अपराध भक्ति के निकट	,,	१०
७५	वैष्णव निन्दा	अ०	४
,,	वैष्णव सेवा	म०	२
,,	प्रसाद महिमा	अ०	४
७६	श्रीगदाधर के प्रति	अ०	७
,,	श्रीअद्वैत के प्रति	अ०	६
,,	श्रीभागवत	म०	२१
,,	श्रीदेवानन्दके सम्वन्धमें	म०	२१
७७	श्रीदेवानन्द के प्रति	अ०	३
,,	भक्तिमय	अ०	३
,,	श्रीभागवत पाठकी विधि-	अ०	३

पृष्ठ	विषय	श्रीचैतन्यभागवत	
७८	श्रीदेवानन्द के प्रति	अ०	३
,,	श्रीईश्वर तत्त्व	आ०	७
,,	श्रीहरिदास की उक्ति	आ०	१४
७९	श्रीविग्रह	म०	२०
,,	जीब तत्त्व	म०	१
८०	जीव अस्वतन्त्र	म०	५
८१	जीव तत्त्व,(माताकेप्रति)	म०	२१
८२	भवितव्यता	आ०	१२
८३	संसार अनित्य—	आ०	१२
,,	भक्तगण के प्रति—	अ०	२
८४	श्री गौर तत्त्व-	म०	८
,,	मातृ भाव	म०	१८
,,	श्रीअक्रूर भाव	,,	,,
,,	श्रीवराह भाव	,,	,,
,,	श्रीबलराम भाव	,,	,,
८५	श्रीरुक्मिणी भाव	,,	,,
,,	श्रीगोपी भाव	अ०	८
,,	भक्त वात्सल्य	म०	२५
,,	श्रीगौर तत्त्व		
,,	श्रीवास के प्रति—	म०	२५
,,	तीर्थ यात्री के प्रति—	आ०	४
८६	श्रीधर के प्रति	आ०	१०
,,	श्रीवास के प्रति	म०	२

पृष्ठा	विषय	श्रीचैतन्यभागवत	
८६	यज्ञ वराह	म०	३
,,	युगावतार	म०	२६
८७	अद्वितीय तत्त्व	अ०	२
,,	श्रीदत्तात्रेय भाव	आ०	६
८८	श्रीसार्वभौम के प्रति	अ०	३
८९	योगक्षेम का वहन	अ०	५
,,	श्रीनित्यानन्द सत्त्व	अ०	२
,,	श्रीराधव के प्रति	अ०	५
,,	राघव	,,	,,
,,	पतित का उद्धार	अ०	६
	परमार्थ में	अ०	६
९०	भक्तगण के प्रति	म०	१२
,,	श्रीनित्यानन्द के प्रति	म०	४
,,	वुभ्किलाम	म०	४
,,	नामरूप	अ०	१
९१	श्रीनित्यानन्द के प्रति	अ०	५
९२	श्रीअद्वैत तत्त्व	म०	१६
९३	श्रीअद्वैत के प्रति	अ०	९
,,	श्रीअद्वैत के प्रति	अ०	९
,,	श्री श्रीअद्वैत के प्रति	म०	२
९४	श्रीहरिदास तत्त्व	आ०	२४
९५	विज्ञप्ति		

—❋❋—

* श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम् *

श्रीचैतन्य सूक्ति सुधाकरः

* श्रीचैतन्य चरितामृत *

शिक्षाष्टक चै० च० २० अ

हर्षे प्रभु कहे शुन स्वरूप रामराय
नाम सङ्कीर्त्तन कलौ परम उपाय ॥
संकीर्त्तन यज्ञे करे कृष्ण आराधन ।
सेईत सुमेधा पाय कृष्णेर चरण ॥
" कृष्णवर्णं त्विषा कृष्णं साङ्गोपाङ्गास्त्रपार्षदं ।
यज्ञैः सङ्कीर्त्तनप्रायैः यजन्ति हि सुमेधसः "
नाम सङ्कीर्त्तन हैते सर्व्वानर्थनाश ।
सर्व्व शुभोदय कृष्णे परम उल्लास ॥
" चेतोदर्पणमार्ज्जनं भवमहादावाग्नि निर्व्वापणं
श्रेयः कैरवचन्द्रिकावितरणं विद्यावधूजीवनम् ॥
आनन्दाम्वुधिवर्द्धनं प्रतिपद पूर्णामृतास्वादनं ।
सर्व्वात्मस्नपनं पर विजयते श्रीकृष्णसङ्कीर्त्तनम् ॥१॥
सङ्कीर्त्तन हैते पाप संसार नाशन ।
चित्तशुद्धि सर्वभक्ति साधन उद्गम ॥
कृष्णप्रेमोद्गम प्रेमामृत आस्वादन ।

कृष्ण प्राप्ति सेवामृत समुद्रे मज्जन ॥
उठिल विषाद दैन्य पड़े आपन श्लोक ।
यार अर्थ शुनि सव याय दुःख शोक ॥
"नाम्नामकारि वहुधा निजसर्व्वशक्ति-
स्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः ।
एतादृशी तव कृपा भगवन्ममापि ।
दुर्द्दैवमीदृशमिहाजनि नानुरागः" ॥२॥
अनेक लोकेर वाञ्छा अनेक प्रकार ।
कृपाते कहिल अनेक नामेर प्रचार ॥
खाइते शुइते यथा तथा नाम लय ।
देश काल नियम नाहि सर्वसिद्ध हय ॥
सर्व्वशक्ति नामे दिल करिया विभाग ।
आमार दुर्द्दैव नामे नाहि अनुराग ॥
येरूपे लइले नाम प्रेम उपजय ।
ताहार लक्षण शुन स्वरूप रामराय ॥
"तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना ।
अमानिना मानदेन कीर्त्तनीयः सदा हरिः ।३।
उत्तम हइया आपनाके माने तृणाधम ।
दुइ प्रकार सहिष्णुता करे वृक्षसम ॥
वृक्ष येन काटिलेह किछु ना वोलय ।
शुकाइया मैले कारे पानि ना मागय ॥
येइ ये मागय तारे देय आपण धन ।
घर्म्म वृष्टि सहे आनेर करये पोषण ॥

उत्तम हैञा वैष्णव ह्वे निरभिमान ।
जीवे सम्मान दिवे जानि कृष्ण अधिष्ठान ॥
एइ मत हञा येइ कृष्णनाम लय ।
श्रीकृष्णचरणे तार प्रेम उपजय ॥
कहिते कहिते प्रभुर दैन्य वाड़िला ।
शुद्ध भक्ति कृष्ण ठाँञि मागिते लागिला ॥
प्रेमेर स्वभाव याहा प्रेमेर सम्वन्ध ।
सेइ माने कृष्णे मोर नाहि भक्ति गन्ध ॥

"न धनं न जनं न सुन्दरीं कवितां वा जगदीश कामये
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे भवताद्भक्तिरहैतुकी त्वयि ४

धन जन नाहि मागों कविता सुन्दरी ।
शुद्ध भक्ति कृष्ण मोरे देह कृपा करि ॥
अतिदैन्ये पुनः मागे दास्य भक्ति दान ।
आपनाके करि संसारी जीव अभिमान ॥

"अयि नन्दतनुज किङ्करं पतितं मां विषमे भवाम्वुधौ
कृपया तव पादपङ्कज-स्थितधूलीसदृशं विचिन्तय "५

तोमार नित्यदास मुञि तोमा पाशरिया ।
पड़ियाछो भवार्णवे मायावद्ध हैया ॥
कृपा करि कर मोरे पदधूलि सम ।
तोमार सेवक करो तोमार सेवन ॥
पुनः अति उत्कण्ठा दैन्य हैल उद्गम ।
कृष्णठाँञि मागे प्रेम नामसङ्कीर्त्तन ॥

" नयनं गलदश्रुधारया वदनं गद्‌गदरुद्धया गिरा ।
पुलकैर्निचितं वपुः कदा तव नामग्रहणे भविष्यति ।।६
प्रेमधन विना मोर व्यर्थ दरिद्र जीवन ।
दास करि वेतन मोरे देह प्रेमधन ।।
रसान्तरावेशे हैल वियोग स्फुरण ।
उद्वेगे विषाद दैन्य करे प्रलापन ।।
"युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितं ।
शून्यायितं जगत् सर्व्वं गोविन्दविरहेण मे " ।७।
उद्वेगे दिवस ना याय क्षण युगसम ।
वर्षामेघसमअश्रु वर्षे द्विनयन ।।
गोविन्द विरहे शून्य हैल त्रिभुवन ।
तूषानले पोड़े येन ना याय जीवन ।।
कृष्ण उदासीन हैला करिते परीक्षण ।
सखी सब कहे कृष्णे कर उपेक्षण ।।
एतेक चिन्तिते राधार निर्म्मल हृदय ।
स्वाभाविक प्रेमस्वभाव करिल उदय ।।
हर्ष उत्कण्ठा दैन्य प्रौढ़ि विनय ।
एतभाव एकठाँञि करिला उदय ।।
एत भावे राधार मन अस्थिर हइल ।
सखीगण आगे प्रौढ़ि ये श्लोक पड़िल ।।
सेई भावे प्रभु सेइ श्लोक उच्चारिल ।
श्लोक उच्चारिते तद्रूप आपनि हइल ।।
" आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु मा-

मदर्शनान्मर्म्महतां करोतु वा।
यथा तथा वा विदधातु लम्पटो
मत् प्राणनाथस्तु स एव नापर: ” ।८।

* * * *

'युगधर्म—आ० अ १७'

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ॥
कलिकालेर धर्म्म कृष्णनाम सङ्कीर्त्तन (म० ११)

गृहस्थेर कर्त्तव्य (म० १५)

रामानन्द ओ सत्यराज खान प्रति—

प्रभु कहे कृष्णसेवा वैष्णव सेवन।
निरन्तर कर कृष्ण नाम संकीर्त्तन।

कुलीन ग्रामवासी प्रति:—म० १६

प्रभु कहे वैष्णवसेवा नामसंकीर्त्तन।
दुइ कर शीघ्र पाव श्रीकृष्णचरण ॥

कूर्म्मप्रति:—म० ७

प्रभु कहे ऐछे वात कभु ना कहिवा।
गृहे रहि कृष्णनाम निरन्तर निवा॥
यारे देख तारे कर कृष्ण उपदेश।
आमार आज्ञाय गुरु हैआ तार एइ देश।

कुष्ठ प्रति:—म० ७

प्रभु कहे कभु तोमार ना हवे अभिमान।

निरन्तर कर तुमि कृष्ण कृष्ण नाम ।
कृष्ण उपदेशि कर जीवेर निस्तार।
अचिराते कृष्ण तोमा करिवेन अङ्गीकार ।

नवद्वीपवासी प्रति–(म०७)

घरे गिया कर सदा कृष्ण–सङ्कीर्त्तन ।
कृष्णनाम कृष्णकथा कृष्ण आराधन ।।

वैष्णव अपराध

चापाल गोपाल प्रति–आ०१७

श्रीवास पण्डिते तोर हैयाछे अपराध ।
ताहा याह तिहो यदि करेण प्रसाद ।।
तवे तोर हइवे पाप विमोचन ।
यदि पुनः ऐछे नाहि कर आचरण ।।

रूपप्रति–म०१९

यदि वैष्णव अपराध उठे हाति माता ।
उपाड़े वा छिण्डे तार शुकि याय पाता ।।

मातृभक्ति (म०३)

माताप्रति–

काँदिया वले प्रभु शुन मोर आइ ।
तोमार शरीर ए–मोर किछु नाइ ।।
तोमारि पालित देह जन्म तोमा हैंते ।
कोटि जन्मे तोमार ऋण नारिव शोधिते ।।

जानिवा ना जानि यदि करिल सन्न्यास ।
तथापि तोमारे कभु नहिव उदास ।।
तुमि याहा कह आमि ताहाइ रहिव ।
तुमि येइ आज्ञा कर सेई से करिव ।।
एत वलि पुनः पुनः करे नमस्कार ।
आपनार दुःखसुख ताहा नाहि गणि ।
तॉर येइ सुख निज सुख मानि ।।

दामोदर प्रति—(म० १५)

एइ वस्त्र माताके दिह एसव प्रसाद ।
दण्डवत् करि आमार क्षमाइओ अपराथ ।।
तार सेवा छाड़ि आमि करियाछि सन्न्यास ।
धर्म्म नहे कैल आमि निज धर्म नाश ।।

पितामातार सेवा (अ० १३)

रघुनाथ भट्ट प्रति–

विवाह ना करिह वलि निषेध करिल ।
वृद्ध माता पिता याइ करह सेवने ।
वैष्णव स्थाने भागवत करिह अध्ययने ।।

वृन्दावन वास ‘ अ० १३ ’

आमार आज्ञाय रघुनाथ याह वृन्दावन ।
ताहा याइ रह याँहा रूप सनातन ।।
भागवत पड़ सदा लओ कृष्णनाम ।
अचिरे कृपा करिवेन कृष्ण भगवान ।।

रूप प्रति (अ० १)

वृन्दावने याह तुमि रहिओ वृन्दावने।
एकवार इहाँ पाठाइओ सनातने॥
व्रजे याइ रस शास्त्र कर निरूपण।
लुप्त तीर्थ सव तार करिह प्रचारण॥

जगदानन्द प्रति—

मथुरा गेले सनातनेर सङ्गे से रहिवा।
मथुरावासी सवार चरण वन्दिवा॥
दूरे रहि भक्ति करिवा सङ्गे ना रहिवा।
ता सवार आचार चेष्टा लइते नारिवा॥
सनातन सङ्गे करिह वन दरशन।
सनातनेर सङ्ग ना छाड़िवा एकक्षण।
शीघ्र आसिह तथा ना रहिओ चिरकाल।
गोवर्द्धने ना चड़िह देखिते गोपाल॥

निष्ठा (अ० ४)

अनुपम प्रति—

सेइ भक्त धन्य ये ना छाड़े प्रभुर चरण।
सेइ प्रभु धन्य ये ना छाड़े निज जन॥
दुर्दैवे सेवक यदि याय अन्य स्थाने।
सेइ प्रभु धन्य तारे चुले धरे आने॥

मर्य्यादा पालन (अ० ४)

सनातन प्रति–(अ० ४)

तथापि भक्तेर स्वभाव मर्य्यादा रक्षण ।
मर्य्यादा पालन हय साधुर भूषण ।
मर्य्यादा लङ्घिले लोक करे उपहास ।
इहलोक परलोक दुइ हय नाश ।।

शिवानन्द प्रति—म० १५

गृहस्थ हयेन इँहो चाहिये सञ्चय ।
सञ्चय ना कैले कुटुम्व भरण ना हय ।
प्रतिवर्षे सव आमार भक्तगण लञा ।
गुण्डिचाय आसिवे सवार पालन करिया ।।

कुलीन ग्रामी प्रति—(म० १५)

कुलीन ग्रामीरे कहे सम्मान करिया ।
प्रत्यब्दे आसिवे यात्राय पट्टडोरी लइया ।।

नामेर महिमा अ० १६

तपन मिश्र प्रति—

प्रभु तुष्ट हैया साध्य साधन कहिल ।
नामसङ्कीर्त्तन कर उपदेश दिल ।।

प्रकाशानन्द प्रति—-म० २५

निरन्तर कर कृष्ण नाम संकीर्त्तन ।
हेलाय मुक्ति पावे, पावे प्रेमधन ।।

सुवुद्धि राय प्रति (म० २५)

प्रभु कहे इहा हैते याह वृन्दाबन ।
निरन्तर कर कृष्ण नाम संकीर्त्तन ।
एक नामाभासे तोमार पापदोष यावे ।
आर नाम लइते कृष्ण चरण पाइवे ।।

सनातन प्रति (अ० ४)

भजनेर मध्ये श्रेष्ठ नवविधा भक्ति ।
कृष्ण प्रेम कृष्ण दिते धरे महाशक्ति ।।
तार मध्ये सर्व्वश्रेष्ठ नाम संकीर्त्तन ।
निरपराधे नाम लइले पाय प्रेमधन ।।

कृष्णनाम कृष्णमन्त्र (आ० ७)

कृष्ण मन्त्र जप सदा एइ मन्त्र सार ।
कृष्ण मन्त्र हइते हय संसार मोचन ।
कृष्ण नाम हइते पावे कृष्णेर चरण ।
नाम विना कलिकाले नाहि आर धर्म ।
सर्व्बमन्त्र सार नाम एइ शास्त्र मर्म्म ।।

नाम साधन की रीति आ० १७

(प्रभु) हरेर्नामश्लोकेर कैल अर्थ विवरण ।
हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम् ।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ।।
कलिकाले नामरूपे कृष्ण अवतार ।

नाम हइते हय सर्व्व जगत् निस्तार—॥
दार्ढ्य लागि हरेर्नाम उक्ति तिनवार।
जड़ लोक वुझाइते पुनरेवकार॥
केवल शब्द पुनरपि निश्चय करण।
ज्ञान योग कर्म्म तप आदि निवारण॥
अन्यथा ये माने तार नाहिक निस्तार।
नाहि नाहि नाहि एइ तिन एकवार॥
तृण हइते नीच हइया सदा लवे नाम।
आपनि निरभिमानी अन्ये दिवे मान॥
तरुसम सहिष्णुता वैष्णव करिवे।
भर्त्सन ताड़ने कारे किछु ना वलिवे॥
काटिलेह तरु येन किछु ना बोलय।
शुकाइया मरे तवु जल ना मागय॥
एइ मत वैष्णव कारे किछु ना मागिव।
अयाचित वृत्ति किम्वा शाक फल खाइव।
सदा नाम लइव यथालाभेते सन्तोष।
एइ मत आचार करे भक्तिधर्म्म पोष।

साधन भक्ति (म० ९)

तत्त्ववादी प्रति—

प्रभु कहे शास्त्रे कहे श्रवण कीर्त्तन।
कृष्णप्रेमसेवा फलेर परम साधन।
कर्म्मत्याग कर्म्मनिन्दा सर्व्वशास्त्रे कहे।

कर्म्म हैते कृष्णप्रेम भक्ति कभु नहे ।।
पञ्चविध मुक्ति त्याग करि भक्तगण ।
फल्गु करि मुक्ति देखे नरकेर सम ।।
कर्म्ममुक्ति दुइ वस्तु त्यजे भक्तगण ।

श्रीभगवत् प्राप्तिका उपाय—(आ ०७)

भगवान प्राप्ति हेतु ये कहि उपाय ।
श्रवणादि भक्ति कृष्ण प्राप्तिर सहाय ।।
सेइ सर्व्व वेदेर अभिधेय नाम ।
साधन भक्तिते हय प्रेमेर उद्गम ।।
कृष्णेर चरणे यदि हय अनुराग ।
कृष्ण विनु अन्यत्र तार नाहि रहे राग ।।

परम पुरुषार्थ–(म० ६)

प्रभु कहे भट्टाचार्य्य ना कर विस्मय ।
भगवाने भक्ति परम पुरुषार्थ हय ।।
आत्माराम पर्यन्त करे ईश्वर भजन ।
ऐछे अचिन्त्य भगवानेर गुणगन ।।

शुद्ध भक्ति (म० १९)

शुद्धभक्ति हैते हय प्रेमेर उदय ।
अतएव शुद्धभक्तिर कहिये लक्षण ।
अन्य वाञ्छा अन्य पूजा छाड़ि ज्ञानकर्म्म ।
आनुकूल्ये सर्व्वेन्द्रिये कृष्णानुशीलन ।
एइ शुद्ध भक्ति इहा हैते प्रेम हय ।।

पञ्चरात्रे भागवते एइ लक्षण कय।
साधनभक्ति हैते हय रतिर उदय॥
रति गाढ़ हैले तार प्रेम नाम हय।
प्रेमवृद्धि क्रमे नाम स्नेह मान प्रणय।
राग अनुराग तार महाभाव हय।

वैष्णव का लक्षण—(म०–१६)

प्रभु कहे यार मुखे शुनि एकवार।
कृष्णनाम सेइ पूज्य श्रेष्ठ सवाकार॥
कृष्णनाम निरन्तर याहार वदने।
सेइ सेइ वैष्णव भज ताहार चरणे॥
याहार दर्शने मुखे आइसे कृष्णनाम।
तारारे जानिह तुमि वैष्णव प्रधान।
क्रम करि प्रभु कहे वैष्णव लक्षण।
वैष्णव वैष्णवतर आर वैष्णवतम।

वैष्णव आचार—(आ० १२)

प्रभु कहे वाउलिया ऐछे केने कर।
आचार्य्येर लज्जा धर्म हानि से आचर।
प्रतिग्रह कभु ना करियो राजधन।
विषयीर अन्न खाइले दुष्ट हय मन।
मन दुष्ट हइले नहे कृष्णेर स्मरण।
कृष्ण स्मृति विना हय निष्फल जीवन।
लोक लज्जा हय धर्म्म कीर्त्ति हय हानि।

ऐछे कर्म्म ना करिह कभु इहा जानि ॥

वैष्णव वेश (म० २०)

प्रभु कहे क्षोर कराह सनातन ।
एइ वेश दूर कर याह लज्ञा ।
तिन मुद्रार भोट गाय माधुकरि ग्रास ।
धर्म्म हानि हय लोके करे उपहास ।

एकादशी (आ० १५)

माता वले ताहा दिव या तुमि माँगिवे ।
प्रभु कहे एकादशीते अन्न ना खाइवे ।

विषय त्याग

श्रीरामानन्द प्रति—म० ८

विषय छाड़िया तुमि याह नीलाचले ।
आमि तीर्थ करि ताहा आसिव अल्पकाले ।
दुईजने नीलाचले रहिब एकसङ्गे ।
सुखे गोङाइव काल कृष्ण कथा रङ्गे ।

रघुनाथ प्रति—अ० ६

प्रभु कहे कृष्णकृपा वलिष्ठ सवा हैते ।
तोमाके काड़िल विषय विष्ठागर्त्त हैते ॥

विषय त्याग

श्रीरघुनाथदास प्रति—अ०६

तथापि विषयेर स्वभाव करे महा अन्ध

सेइ कर्म्म कराय याते हय भववन्ध ॥

काशीनाथ प्रति--(अ० ९)

विषय वार्त्ता शुनि क्षुब्ध हय मन ।

श्रीरूप---श्रीसनातन प्रति--म० १९

कृष्णेर करूणा किछु ना याय वर्णन ।
विषयकूप हइते तोमा काड़िल दुइजन ।

श्रीसनातन प्रति--(म० २०)

प्रभु कहे उहा आमि करियाछि विचार ।
विषयरोग खण्डाइल कृष्ण ये तोमार ।

श्रीस्वरूप प्रति-(अ० ६)

विषयीर अन्न खाइले मलिन हय मन ।
मलिन मन हैले नहे कृष्णेर स्मरण ।
विषयीर अन्ने हय राजस निमन्त्रण ।
दाता भोक्ता दोँहार मलिन हय मन ।

युक्त वैराग्य

श्रीरघुनाथदास प्रति (म० १६)

स्थिर हओ घरे याओ ना हओ वातुल ।
क्रमे क्रमे पाय लोक भवसिन्धु कूल ।
मर्कट वैराग्य ना कर लोक देखाइया ।
यथायोग्य बिषय भुञ्ज अनासक्त हइया ।
अन्तरनिष्ठा कर वाह्ये लोक व्यवहार ।

अचिराते कृष्ण तोमा करिवेन उद्धार।

भजनीय के ? (म० १५)

सेइ कृष्ण भज तुमि हओ कृष्णाश्रय।
कृष्ण विना उपासना मने नाहि लय।

सन्न्यासीर धर्म

भक्तवृन्द प्रति– (म० २)

सन्न्यासीर धर्म नहे सन्न्यास करिया।
निज जन्मस्थाने रहे कुटुम्व लइया।

सार्व्वभौम प्रति– (म० ११)

सन्न्यासी विरक्त आमार राज दरशन ॥
स्त्री-दरशन सम विषेर भक्षण ॥
प्रभु कहे तथापि राजा काल सर्पाकार।
काष्ठ नारी स्पर्शे यैछे उपजे विकार।

छोट हरिदास सम्वन्धे–(अ० २)

प्रभु कहे वैरागी करे प्रकृति सम्भाषण।
देखिते ना पारि आमि ताहार वदन।
दुर्व्वार इन्द्रिय करे विषय ग्रहण।
दारु प्रकृति हरे मुनिजनेर मन ॥

श्रीसनातन प्रति–(अ० ४)

आमित सन्न्यासी आमार सम दृष्टि धर्म्म।
चन्दन पङ्कते आमार ज्ञान हय सम ॥

श्रीअद्वैत आचार्य्य प्रति—(म० ३)

प्रभु कहे सन्न्यासीर भक्ष्य नहे उपकरण।
इहा खाइले कैछे हवे इन्द्रिय वारण।
सन्न्यासीर धर्म नहे उच्छिष्ट राखिते।

गोविन्द प्रति-(अ० ६)

वैरागीर धर्म्भ सदा नाम संङ्कीर्त्तन।
मागिया खाइया करे जीवन रक्षण।
वैरागी इहया येवा करे परापेक्षा।
कार्य्य सिद्धि नहे कृष्ण करेन उपेक्षा।
वैरागी हइया करे जिह्वार लालस।
परमार्थ याय आर हय रसेर वश।
वैरागीर कृत्य सदा नाम संकीर्त्तन।
शाक पत्र फल मूले उदर भरण।
जिह्वार लालसे येइ इति उति धाय।
शिश्नोदर परायण कृष्ण नाहि पाय।

श्रीरघुनाथदास प्रति(अ० ६)

ग्राम्यवार्त्ता ना शुनिवे ग्राम्यवार्त्ता ना कहिवे।
भाल ना खाइवे आर भाल ना पड़िवे।
अमानी मानद कृष्ण सदा नाम लवे।
व्रजे राधाकृष्ण सेवा मानसे करिवे।

गोविन्द प्रति-(अ० १३)

प्रभु कहे गोविन्द आजि राखिले जीवन।

स्त्रीस्पर्श हैले आमार हैत मरण।

सन्न्यासेर महिमा (आ० १५)

भाल हैल विश्वरूप सन्न्यास करिल।
पितृकूल मातृकूल दुई उद्धारिल।

काम एवं प्रेम (आ० ४)

आत्मेन्द्रिय प्रीतिवाञ्छा तारे वलि काम।
कृष्णेन्द्रिय प्रीतिइच्छा धरे प्रेम नाम।

गोपीभाव (म० १८)

निजेन्द्रिय सुखहेतु कामेर तात्पर्य्य।
कृष्णसुखे तात्पर्य्य गोपीभाववर्य्य।
निजेन्द्रिय सुख वाञ्छा नहे गोपीकार।
कृष्णे सुख दिते करे सङ्गम विहार।

निरपेक्षता (अ० ३,म०७)

दामोदर प्रति—

निरपेक्ष ना हैले धर्म्म ना याय रक्षणे।

दामोदर सम्वन्धे—

लोकापेक्षा नाहि इँहार कृष्ण कृपा हैते॥

इष्टनाम ग्रहण (अ० ७)

श्रीवल्लभ भट्ट प्रति—

प्रभु कहेन तुमि ना जान धर्म्ममर्म्म।

स्वामीर आज्ञा पाले एइ पतिव्रताधर्म्म ॥
पतिर आज्ञा निरन्तर ताँर नाम हैते ।
पतिर आज्ञा पतिव्रता ना पारे लङ्घिते ।
अतएव नाम लय नामेर फल पाय ।
नामेर फल कृष्णपदे प्रेम उपजय ॥

श्रीधरस्वामी के सम्वन्धे में

श्रीवल्लभ भट्ट प्रति– (अ० ७)

प्रभु हाँसि कहे स्वामी ना माने येइ जन ।
वेश्यार भितरे तारे करिये गणन ।
श्रीधरस्वामी निन्दि निज टीका कर ।
श्रीधरस्वामी नाहि मान एत गर्व्व धर ।
श्रीधरस्वामीर प्रसादे भागवत जानि ।
जगत् गुरु श्रीधरस्वामी गुरु करि मानि ।
श्रीधर उपरे गर्व्वे ये किछु लिखिवे ।
अर्थ व्यर्थ लिखन सेइ लोक ना मानिवे ॥
श्रीधरेर अनुगत ये करे लिखन ।
सव लोक मान्य करि करिवे ग्रहण ॥
श्रीधर अनुगत कर भागवत व्याख्यान ।
अभिमान छाड़ि भज कृष्ण भगवान ।
अपराध छाडि कर कृष्ण संकीर्त्तन ।
अचिराते पावे तवे कृष्णेर चरण ।

श्रीकृष्णनाम (अ० ७)

श्रीवल्लभ भट्ट प्रति–

प्रभु कहे कृष्ण नामेर वहु अर्थ नाहि मानि ।
श्यामसुन्दर यशोदानन्दन एइ मात्र जानि ।।

श्रीईश्वर तत्त्व (आ० ७)

श्रीअचिन्त्य–

अविचिन्त्य–शक्ति–युक्त–श्रीभगवान ।
इच्छाय जगत् रूपे पाय परिणाम ।
तथापि अचिन्त्यशक्त्ये हय अविकारी ।
प्राकृत चिन्तामणि ताहे दृष्टान्त ये धरि ।

अप्राकृत विग्रह–(म० ६)

भगवान वहु हैते यवे कैल मन ।
प्राकृत शक्तिके तवे कैल विलोकन ।
सेकाले नाहि जन्मे प्राकृत मन नयन ।
अतएव अप्राकृत ब्रह्मे'र नेत्र मन ।
" अपाणि " श्रुति वर्ज्जे प्राकृत पाणि चरण ।
पुनः कहे शीघ्र चले करे सर्व्वग्रहण ।
अतएव श्रुति कहे ब्रह्म सविशेष ।
मुख्य छाड़ि लक्षणाते माने निर्व्विशेष ।

सशक्तिक–म० ६

षड़ैश्वर्य्य पूर्णानन्द विग्रह याँहार ।
हेन भगवाने तुमि कह निराकार ।।

स्वाभाविक तिन शक्ति येइ ब्रह्मे हय।
निःशक्ति करिया तारे करह निश्चय।
सत्, चित्, आनन्दमय ईश्वर स्वरूप।
तिन अंशे चिच्छक्ति हय तिन रूप।
आनन्दांशे ह्लादिनी सदंशे सन्धिनी।
चिदंशे सम्बित् यारे ज्ञान करि मानि।
अन्तरङ्गा चिच्छक्ति तटस्था जीवशक्ति।
वहिरङ्गा माया तिने करे प्रेमभक्ति।
षड़् विध ऐश्वर्य्य प्रभुर चिच्छक्ति विलास।
हेन शक्ति नाहि मान परम साहस।

सविशेष (म० १८)

प्रभु कहे तोमार शास्त्रे स्थापे निर्व्विशेष।
ताहा खण्डि सविशेष स्थापियाछे वेद।
तोमार शास्त्रे कहे शेषे एकइ ईश्वर।
सर्व्वैश्वर्य्य पूर्ण तिँहो श्याम कलेवर।
सच्चिदानन्द देह पूर्णब्रह्म रूप।
सर्व्वात्मा सर्व्वज्ञ नित्य सर्व्वादि स्वरूप।
सृष्टि स्थिति प्रलय याहा हैते हय।
स्थूल सूक्ष्म जगतेर तिहो समाश्रय।

श्रीकृष्णशक्ति (म० २०)

श्रीसनातन प्रति—

अनन्त शक्ति मध्ये कृष्णेर तिन शक्ति प्रधान।

इच्छाशक्ति क्रियाशक्ति ज्ञानशक्ति नाम ।
इच्छाशक्ति प्रधान कृष्ण इच्छा सर्व्वकर्त्ता ।
ज्ञानशक्ति प्रधान वासुदेव चित्ताधिष्ठाता ।
इच्छा ज्ञान क्रिया विना ना हय सृजन ।
तिनेर तिन शक्ति मिलि प्रपञ्चवचन ।
क्रियाशक्ति प्रधान सङ्कर्षण वलराम ।
प्राकृता प्राकृत सृष्टि करेन निर्म्माण ।
अहङ्कारेर अधिष्ठाता कृष्णेर इच्छाय ।
गोलोक वैकुण्ठ सृजे चिच्छक्ति द्वाराय ।
यद्यपि असृज्य नित्य चिच्छक्ति विलास ।
तथापि सङ्कर्षण इच्छाय ताहार प्रकाश ।
मायाद्वारे सृजेन तिँहो ब्रह्माण्डेर गण ।
जड़रूपा प्रकृति नहे ब्रह्माण्ड कारण ।।
जड़ हैते सृष्टि नहे ईश्वर शक्ति विने ।
ताहाते सङ्कर्षण करेन शक्ति आधाने ।
ईश्वरेर शक्त्ये सृष्टि करये प्रकृति ।
लौह येन अग्निशक्त्ये धरे दाहशक्ति ।।

श्रीकृष्ण स्वरूप म० २०

श्रीसनातन प्रति—

कृष्णेर स्वरूप अनन्त वैभव अपार ।
चिच्छक्ति मायाशक्ति जीव शक्ति आर ।
वैकण्ठ ब्रह्माण्डगण शक्तिकार्य्य हय ।

स्वरूपशक्ति, शक्तिकार्य्येर, कृष्ण समाश्रय ।
कृष्णेर स्वरूप विचार शुन सनातन ।
अद्वयज्ञानतत्त्व व्रजे ब्रजेन्द्रनन्दन ।।
सर्व्व आदि सर्व्व अंशी किशोर शेखर ।
चिदानन्द देह सर्वाश्रय सर्व्वेश्वर ।।
स्वयं भगवान कृष्ण गोविन्द पर नाम ।
सर्व्वैश्वर्य्य पूर्ण यार गोलोक नित्यधाम ।

त्रिविध प्रकाश—म० २०

ज्ञान योग भक्ति तिन साधनेर वशे ।
ब्रह्म आत्मा भगवान त्रिविध प्रकाशे ।

किशोर धर्म्मी—म० २०

किशोर शेखर धर्म्मी व्रजेन्द्र नन्दन ।

श्रीकृष्ण–श्रीनारायण–अभेद तत्त्व–म० ९

कृष्ण नारायण यैछे एकइ स्वरूप ।
गोपी लक्ष्मी भेद नाहि तैछे एकरूप ।।
गोपीद्वारे लक्ष्मी करे कृष्णसङ्गास्वाद ।
ईश्वरत्वे भेद मानिले हय अपराध ।
एकइ ईश्वर भक्तेर ध्यान अनुरूप ।
एकइ विग्रहे करे नानाकार रूप ।

भगवत्ता अ० ९

ईश्वर जगन्नाथ यार हाते सर्व्व अर्थ ।

कर्त्तुमकर्त्तुमन्यथा करिते समर्थ ॥

श्रीहरि म० २४

हरि शब्दे नानार्थ दुई मुख्यतम
सर्व्व अमङ्गल हरे प्रेम दिया हरे मन ।

श्रीब्रह्म म० २४

ब्रह्म शब्देर अर्थ तत्त्व सर्व्ववृहत्तम ।
स्वरूप ऐश्वर्य्य करि नाहि यार सम ।
सेइ ब्रह्म शब्दे कहे स्वयं भगवान ।
अद्वितीय ज्ञान याहा विना नाहि आन ।
सेइ अद्वय तत्त्व कृष्ण स्वयं भगवान ।
याहा विनु कालत्रये वस्तु नाहि आन ॥

श्रीकृष्ण नाम स्वरूप विग्रह म० १७

कृष्णनाम कृष्ण स्वरूप दुइत समान ॥
नाम विग्रह स्वरूप तिन एक रूप ।
तिने भेद नाहि तिन चिदानन्द रूप ।
देह देही नाम नामी कृष्णे नाहि भेद ।
जीवेर धर्म्म नाम देह स्वरूप विभेद ।
अतएव कृष्णेर नाम देह विलास ।
प्राकृतेन्द्रिय ग्राह्य नहे हय स्वप्रकाश ।
कृष्णनाम कृष्णगुण कृष्ण लीलावृन्द ।
कृष्णेर स्वरूप सम सव चिदानन्द ॥

श्रीप्रकाशानन्द प्रति—म० ६

ईश्वरेर विग्रह सच्चिदानन्दाकार।
से विग्रह कह सत्व गुणेर विकार ?

श्रीविग्रह सेवा (म० १६)

श्रीगदाधर प्रति—

गदाधर पण्डित यवे सङ्गे चलिला।
क्षेत्र सन्न्यास ना छाड़िओ प्रभु निषेधिला।
प्रभु कहे इहा कर गोपीनाथ सेवन।
पण्डित कहे कोटी सेवा त्वत्पद दर्शन।
प्रभु फहे सेवा छाड़िवे आमाय लागि दोष।
इहा रहि सेवा कर आमार सन्तोष।

जीव ईश्वर में भेद (म० ६)

श्रीसार्व्वभौम भट्टाचार्य्य प्रति—

मायाधीश मायावश ईश्वरे जीवे भेद।
हेन जीव ईश्वर सह कहत अभेद।
व्याप्य व्यापक भावे जीव ब्रह्म जानि (म० १०)
जीव व्याप्य ब्रह्म व्यापक शास्त्रेते वाखानि।

भट्टाचार्य्य प्रति—म० १८

प्रभु कहे दिष्णु विष्णु इहा ना कहिवा।
जीवाधमे कृष्णज्ञान कभु ना करिवा।
सन्न्यासी चित्कण जीव किरण कण सम।
षड़ैश्वर्य्य पूर्ण कृष्ण हय सूर्य्योपम।

जीव ईश्वर तत्त्व कभु नहे सम ।
ज्वलदग्नि राशि यैछे स्फुलिङ्गेर कण ।

श्रीप्रकाशानन्द प्रति–म० २५

जीवे विष्णुवुद्धि करे येइ रुद्र सम ।
नारायणे माने तारे पाषण्डे गणन ।

जीव स्वरूप

अनुशक्ति—आ० ७

ईश्वरेर तत्त्व येन ज्वलित ज्वलन ।
जीवेर स्वरूप यैछे स्फुलिङ्गेर कण ।
जीवतत्त्व शक्ति कृष्णतत्त्व शक्तिमान ।
गीता विष्णु पुराणादि ताहाते प्रमाण ।

जीव अति सूक्ष्म—म० १९

केशाग्र शतेकभाग पुन शतांश करि ।
तार सम सूक्ष्म जीवेर स्वरूप विचारि ।

विभिन्नांश–(म० २२)

विभिन्नांश जीव ताँर शक्तिते गणन ।
सेइ विभिन्नांश जीव दुइत प्रकार ।
एक नित्य मुक्त एकेर नित्य संसार ॥

भेदाभेद प्रकाश म० २९

जीवेर स्वरूप हय कृष्णेर नित्य दास ।
कृष्णेर तटस्था शक्ति भेदाभेद प्रकाश ॥

सूर्य्यांश किरण यैछे अग्नि ज्वालाचय ।
स्वाभाविक कृष्णेर तिन शक्ति हय ।

जीवका बन्धन का हेतु ?—(म० २०,२२)

कृष्ण भुलि सेई जीव अनादि वहिर्मुख ।
अतएव माया तारे देय संसार दुःख ।
कभु स्वर्गे उठाय कभु नरके डुवाय ।
दण्ड्यजने राजा येन नदीते चुवाय ।
कृष्णेर नित्य दास जीव ताहा भुलि गेल ।
सेइ दोषे माया तार गलाय बान्धिल ॥

उद्धार का उपाय (म० २२)

कृष्ण भजन—

ताते कृष्ण भजे करे गुरुर सेवन ।
माया जाल छुटे पाय कृष्णेर चरण ।

शरणागति–म० २२

कृष्ण तोमार हङ यदि वले एकवार ।
माया वन्ध हैते कृष्ण तारे करे पार ।

साधुसङ्ग–म० २२

कोन भाग्ये कारो संसार क्षयोन्मुख हय ।
साधु सङ्गे तार कृष्णे रति उपजय ।
साधु सङ्गे कृष्णभक्त्ये श्रद्धा यदि हय ।
भक्तिफल प्रेम हय संसार याय क्षय ।

महत्कृपा विना कोन कर्म्मे भक्ति नय ।
कृष्णप्राप्ति दूरे रहु संसार ना याय क्षय ।
साधु सङ्ग साधु सङ्ग सर्व्व शास्त्रे कय ।
लव मात्र साधुसङ्गे सर्व्वसिद्धि हय ।
कृष्ण भक्ति जन्म मूल हय साधु सङ्ग ।
कृष्ण प्रेम जन्मे तिहो पुनः मुख्य अङ्ग ।
भ्रमिते भ्रमिते यदि साधु वैद्य पाय ।
ताँर उपदेश मन्त्रे पिशाची पलाय ।

भक्तिका प्राधान्य म० २२

एइ सव साधनेर अति तुच्छ फल ।
कृष्णभक्ति विना ताहा दिते नारे बल ॥

श्रीरूप प्रति–म० १६

ब्रह्माण्ड भ्रमिते कोन भाग्यवान जीव ।
गुरु कृष्ण प्रसादे पाय भक्ति लता वीज ॥
माली हञा करे सेइ बीज आरोहण ।
श्रवण कीर्त्तन जले करये सेचन ॥
उपजिया वाड़े लता ब्रह्माण्ड भेदि याय ।
विरजा ब्रह्मलोक भेदि पर व्योम याय ॥
तवे याय तदुपरि गोलोक वृन्दावन ।
कृष्णचरण कल्पवृक्षे करे आरोहण ।
ताहा विस्तारित हञा फले प्रेमफल ।
इहा माली नित्य सेचे श्रवणादि जल ।

यदि वैष्णवअपराध उठे हाति माता।
उपाड़े वा छिण्डि तार शुकि याय पाता।
तवे माली यत्न करि करे आवरण।
अपराध हाति यैछे ना हय उद्गम।
किन्तु यदि लतार अङ्गे उठे उपशाखा।
भुक्ति मुक्ति वाञ्छा यत असंख्य तार लेखा ।।
निषिद्धाचार कुटिनाटी जीवहिंसन।
लाभ पूजा प्रतिष्ठादि उपशाखा गण ।।
सेकजल पाञा उपशाखा वाड़ि याय।
स्वब्ध हइया मूलशाखा वाड़िते ना पाय।
प्रथमेई उपशाखा करये छेदन।
तवे मूल शाखा वाड़ि याय वृन्दावन ।।

श्रीसनातन प्रति—म० २०

साधु शास्त्र कृपाय यदि कृष्णोन्मुख हय।
सेइ जीव निस्तरे माया ताहारे छाड़य।
माया मुग्ध जीवेर नाहि स्वतः कृष्णज्ञान।
जीवेरा कृपाय कैल कृष्ण वेद पुराण।
शास्त्र गुरु आत्मारूपे आपना जानान।
कृष्ण मोर प्रभु त्राता जीवेर हय ज्ञान।
वेद शास्त्रे करे सम्वन्ध अभिधेय प्रयोजन !
कृष्ण प्राप्य सम्वन्ध भक्ति प्राप्येर साधन।
अभिधेय नाम भक्ति प्रेम प्रयोजन।

पुरुषार्थ शिरोमणि प्रेम महाधन ।
कृष्ण माधूर्य्य सेवानन्द प्राप्तिर कारण ।
कृष्णसेवा करे कृष्णरस आस्वादन ॥

श्रद्धा—म० २२

श्रद्धा शब्दे बिश्वास कहे सुदृढ़ निश्चय ।
कृष्णभक्ति कैले सर्व्व कर्म्म कृत हय ॥

शुद्धभक्ति—म० १९

शुद्धभक्ति हैंते हय प्रेमेर उत्पन्न ।
अतएव शुद्धभक्तिर करिये लक्षण ॥

शुद्धभक्तिका लक्षण —म० १९

अन्य वाञ्छा अन्य पूजा छाड़ि ज्ञान कर्म्म ।
आनुकूल्ये सर्व्वेन्द्रिय कृष्णानुशीलन ।

साधनका अन्तराय—म० १९

भुक्ति मुक्ति आदि वाञ्छा यदि मने हय ।
साधन करिले प्रेम उत्पन्न ना हय ॥

त्याज्य क्या (म० २२)

असत् सङ्ग त्याग एइ वैष्णव आचार ।
स्त्रीसङ्गी एक असाधु कृष्णाभक्त आर ।

आत्मसमर्पण—म० २२

एत सव छाड़ि आर वर्णाश्रम धर्म्म ।
अकिञ्चन हञा लय कृष्णेर शरण ॥

शरण लञा करे कृष्णे आत्मसमर्पण ।
कृष्ण तारे तत्काले करेन आत्मसम ॥

श्रीकृष्ण प्राप्तिका उपाय

श्रीसनातन प्रति—म० २०

अतएव भक्ति कृष्ण प्राप्तिर उपाय ।
अभिधेय वलि तारे सर्व्व शास्त्रे कय ।

श्रीकाशीवासी प्रति—आ० ७

भगवान प्राप्ति हेतु ये करि उपाय ।
श्रवणादि भक्ति कृष्ण प्राप्तिर सहाय ॥

पाठान प्रति—म० १८

ताँर सेवा विना जीवेर ना याय संसार ।
मोक्षादि आनन्द हय यार एक कण ।
पूर्णानन्द प्राप्ति ताँर चरण सेवन ।
कर्म्म ज्ञान योग आगे करिया स्थापन ।
सकल खण्डिया स्थापे ईश्वर सेवन ॥
तोमार पण्डित सवार नाहि शास्त्र ज्ञान ।
पूर्व्वापर विधि मध्ये पर वलवान ॥

श्रीसनातन प्रति—(अ० ४)

देह त्यागे कृष्ण ना पाइ पाइये भजने ।
कृष्णप्राप्तिर उपाय कोन नाहि भक्ति विने ।
भक्ति विना कृष्णे कभु नहे प्रेमोदय ।

प्रेम विना कृष्णप्राप्ति अन्य हइते नय ।
कुवुद्धि छाड़िया कर श्रवण कीर्त्तन ।
अचिराते पावे तवे कृष्णप्रेमधन ।
नीच जाति नहे कृष्ण भजने अयोग्य ।
सत्कूल विप्र नहे भजनेर योग्य ।
येइ भजे सेइ वड़, अभक्ता हीन छार ।।
कृष्णभजने नाहि जाति कुलादि विचार ।
दीनेरे अधिक दया करे भगवान ।
कुलीन पण्डित धनीर वड़ अभिमान ।

साधन का क्रम

श्रीरामानन्द प्रति—म० ८

प्रभु कहे पड़ श्लोक साधन निर्णय ।
राय कहे स्वधर्म्माचरणे विष्णुभक्ति हय ।
प्रभु कहे एहो बाह्य आगे कह आर ।
राय कहे कृष्णे कर्म्मार्पण साध्यसार ।
प्रभु कहे एहो वाह्य आगे कह आर ।
राय कहे स्वधर्म्मत्याग भक्ति साध्यसार ।।
प्रभु कहे एहो वाह्य आगे कह आर ।
राय कहे ज्ञानमिश्रा भक्ति साध्यसार ।
प्रभु कहे एहो वाह्य आगे कह आर ।
राय कहे ज्ञानशून्य भक्ति साध्य सार ।
प्रभु कहे एहो हय आगे कर आर ।

राय कहे प्रेम भक्ति सर्व्व साध्यसार ॥
प्रभु कहे एहो हय आगे कह आर ।
राय कहे दास्यप्रेम सर्व्व साध्यसार ॥
प्रभु कहे एहो हय आगे कह आर ।
राय कहे सख्य प्रेम सर्व्व साध्यसार ॥
प्रभु कहे एहोत्तम आगे कह आर ।
राय कहे वात्सल्य प्रेम सर्व्व साध्यसार ॥
प्रभु कहे एहोत्तम आगे कह आर ।
राय कहे कान्ताप्रेम सर्व्व साध्यसार ।
प्रभु कहे एइ साध्यावधि सुनिश्चय ।
कृपा करि कह यदि आगे किछु हय ॥

श्रीसनातन प्रति–म० २३

कोन भाग्ये कोन जीवेर श्रद्धा यदि हय ।
तवे सेइ जीव साधुसङ्ग ये करय ॥
साधु सङ्ग हइते हय श्रवण कीर्त्तन ।
साधनभक्ते हय सर्व्वानर्थ–निवर्त्तन ॥
अनर्थ निवृत्ति हइले भक्ति निष्ठा हय ।
निष्ठा हैते श्रवणाद्ये रुचि उपजय ।
रुचि हइते हय तवे आसक्ति प्रचुर ॥
याहा हैते चित्ते जन्मे कृष्णे प्रीत्यङ्कुर ।
सेइ भाव गाढ़ हइले धरे प्रेम नाम ।
सेइ प्रेम प्रयोजन सर्व्वानन्द धाम ।

श्रीराधातत्त्व—म० ८

कृष्णके आह्लादे ताते नाम ह्लादिनी।
सेइ शक्तिद्वारे सुख आस्वादे आपनि ॥
सुखरूप कृष्ण करे सुख आस्वादन।
भक्तगणे सुख दिते ह्लादिनी कारण।
ह्लादिनीर सार अंश तार प्रेम नाम।
आनन्द चिन्मय रस प्रेमेर आख्यान।
प्रेमेर परम सार महाभाव जानि।
सेइ महाभावरूपा राधा ठाकुराणि ॥
प्रेमेर स्वरूप देह प्रेम विभावित।
कृष्णेर प्रेयसी श्रेष्ठ जगते विदित ॥
सेइ महाभाव हय चिन्तामणि सार।
कृष्णवाञ्छा पूर्ण करे एइ कार्य्य तार ॥

श्रीगोपीतत्त्व—म० ८

राधार स्वरूप कृष्ण प्रेमकल्पलता।
सखीगण हय तार पल्लव पुष्प पाता ॥
महाभाव चिन्तामणि राधार स्वरूप।
ललितादि सखी तार कायव्यूह रूप ॥

माया—म० २०

श्रीसनातन प्रति—

सेइ माया अवलोकिते श्रीसङ्कर्षण।
पुरुष रूपे अवतीर्ण हइला प्रथम ॥

मायार ये दुइ वृत्ति माया आर प्रधान ।
माया निमित्त हेतु विश्वेर प्रकृति उपादान ॥
सेइ पुरुष माया पाने करें अवधान ।
प्रकृति क्षुभित करि करे वीर्य्याधान
साङ्गविशेषाभाषरूपे प्रकृति स्पर्शन ॥
जीवरूप वीज ताते कैल समर्पण ।

नित्यलीला—म० २०

सव लीला नित्य प्रकट करे क्रमे क्रमे ।
अनन्त ब्रह्माण्ड तार नाहिक गणन ॥
कोन् लीला कोन् ब्रह्माण्डे करे प्रकटन ।
एइ मत सव लीला येन गङ्गाधार ।
से से लीला प्रकट करे व्रजेन्द्रकुमार ॥
कोन ब्रह्माण्डे कोन लीलार हय अवस्थान ।
ताते नित्य लीला कहे आगम पुराण ॥

प्रणव—आ० ७

प्रणव से महावाक्य वेदेर निदान ।
प्रणव ये महावाक्य ईश्वरेर मूर्त्ति । (म० ६)
प्रणव हैते सर्व्ववेद जगते उत्पत्ति ॥

विवर्त्त—आ० ७

देहे आत्मवुद्धि एइ विवर्त्तेर स्थान ।
जीवेर देहे आत्मवुद्धि सेह मिथ्या हय ।

जगत्–म० ६

जगत् ये मिथ्या नहे नश्वर मात्र हय ।

सनातन शिक्षा—म० २२

साधन भक्ति–

एवे साधन भक्ति लक्षण शुन सनातन ।
याहा हैते पाइ कृष्णप्रेम महाधन ।।
श्रवणादि क्रिया तार स्वरूप लक्षण ।
तटस्थ लक्षणे उपजय प्रेमधन ।।
नित्य सिद्ध कृष्णप्रेम साध्य कभु नय ।
श्रवणादि शुद्धचित्ते करये उदय ।।
एइत साधन भक्ति दुइत प्रकार ।
एक वैधीभक्ति रागानुगाभक्ति आर ।।

वैधी भक्ति–

विविधाङ्ग साधनभक्ति वहुत विस्तार ।
संक्षेपे कहिये किछु साधनाङ्ग तार ।
गुरुपदाश्रय दीक्षा गुरुर सेवन ।
सद्धर्म्म शिक्षापृच्छा साधुमार्गानुगमन ।।
कृष्णप्रीते भोगत्याग कृष्णतीर्थे वास ।
यावत्निर्व्वाह प्रतिग्रह एकादश्युपवास ।।
धात्र्यश्वत्थ गो विप्र वैष्णव पूजन ।
सेवा नामापराधादि दूरे वर्ज्जन ।।
अवैष्णव सङ्गत्याग वहु शिष्य ना करिवे ।

वहुग्रन्थ कलाभ्यास व्याख्यान वर्ज्जिवे ।।
हानिलाभ सम, शोकादि वश ना हइवे ।
अन्यदेव अन्यशास्त्र निन्दा ना करिवे ।
विष्णुवैष्णव निन्दा ग्राम्यवार्त्ता ना शुनिवे ।
प्राणिमात्रे मनोवाक्ये उद्वेग ना दिवे ।
श्रवण कीर्त्तन स्मरण पूजन वन्दन ।
परिचर्य्या दास्य सख्य आत्मनिवेदन ।
अग्रे नृत्य गीत विज्ञप्ति दण्डवत् नति ।
अभ्युत्थान अनुव्रज्या तीर्थ गृहे गति ।
परिक्रमा स्तवपाठ जप संकीर्त्तन ।
धूप माल्य गन्ध महा प्रसाद भोजन ।
आरत्रिक महोत्सव श्रीमूर्त्ति दर्शन ।
निज प्रिय दान ध्यान तदीय सेवन ।
तदीय तुलसी वैष्णव मथुरा भागवत ।
एइ चारि सेवा हय कृष्णेर अभिमत ।
कृष्णार्थे अखिल चेष्टा तत्कृपावलोकन ।।
जन्मदिनादि महोत्सव लञा भक्तगण ।
सर्व्वदा शरणापत्ति कार्त्तिकादि व्रत ।
चतुःषष्टि अङ्ग एइ परम महत्त्व ।

पञ्चाङ्ग साधन—

साधुसङ्ग नामकीर्त्तन भागवत श्रवण ।
मथुरावास श्रीमूर्त्तिर श्रद्धाये सेवन ।

सकल साधन श्रेष्ठ एइ पञ्च अङ्ग ।
कृष्णप्रेम जन्माय एइ पाँचेर अल्प सङ्ग ॥

भक्तिकी महिमा—म० २२

विधि धर्म्म छाड़ि भजे कृष्णेर चरण ।
निषिद्ध पापाचारे तार कभु नहे मन ।
अज्ञाने ओ हय यदि पाप उपस्थित ।
कृष्ण तारे शुद्ध करेन ना कराय प्रायश्चित ।
ज्ञान वैराग्य भक्तिर कभु नहे अङ्ग ।
यम नियमादि वुले कृष्ण भक्त सङ्ग ।

भावाङ्कुर का लक्षण म० २३

एइ नव प्रीत्यङ्कुर यार चित्ते हय ।
प्राकृत क्षोभे तार क्षोभ नाहि हय ।
कृष्णसम्वन्ध विना व्यर्थ काल ना याय ।
भुक्ति सिद्धि इन्द्रियार्थ तारे नाहि भाय ।
सर्व्वोत्तम आपनाके हीन करि जाने ।
कृष्ण कृपा करिवेन दृढ़ करि माने ।
समुत्कण्ठा हय सदा लालसा प्रधान ।
नाम गाने सदा रुचि लय कृष्णनाम ।
कृष्ण गुणाख्याने हय सर्व्वदा आसक्ति ।
कृष्ण लीला स्थाने करे सर्व्वदा पीरिति ।

रागानुगा भजन म० ७

व्रजलोकेर भावे येइ करये भजन ।

सेइ जन पाय व्रजे व्रजेन्द्रनन्दन ॥

मधुर भाव में भजन—म० २२

राधा कृष्णेर लीला एइ अति गूढ़तर ।
दास्य वात्सल्यादि भावे ना हय गोचर ।
सवे एक सखीगणेर इहा अधिकार ।
सखी हइते हय एइ लीलार विस्तार ।
सखी विना एइ लीला पुष्टि नाहि हय ।
सखी लीला विस्तारिया सखी आस्वादय ।
सखी विना एइ लीलाय अन्येर नाहि गति ।
सखी भावे येइ तारे करे अनुगति ॥
राधाकृष्णेर कुञ्जसेवा साध्य सेइ पाय ।
सेइ साध्य पाइते आर नाहिक उपाय ।
सेइ गोपीभावामृते यार लोभ हय ।
वेदधर्म्म त्यजि से कृष्णके भजय ।
रागानुगामार्गे तारे भजे येइ जन ।
सेइ जन पाय व्रजे व्रजेन्द्रनन्दन ।
व्रजलोकेर कोन भाव लञा येइ भजे ।
भावयोग्य देह पाञा कृष्ण पाय व्रजे ॥
अतएव गोपीभाव करि अङ्गीकार ।
रात्रि दिने चिन्ते राधाकृष्णेर विहार ।
सिद्धदेह चिन्ति करे ताहाञि सेवन ।
सखीभावे पाय राधाकृष्णेर चरण ।

गोपीअनुगति विना ऐश्वर्य्य ज्ञाने ।
भजिलेइ नाहि पाय व्रजेन्द्र नन्दने ।

श्रीसनातन प्रति–

रागात्मिकाभक्ति मुख्या व्रजवासि जने ।
तार अनुगत भक्ति रागानुगानामे ।
इष्टे गाढ़ तृष्णा राग स्वरूप लक्षण ।
इष्टे आविष्टता तटस्थ–लक्षण कखन ।
रागमयी भक्तिर हय रागात्मिका नाम ।
ताहा शुनि लुब्ध हय कोन भाग्यवान ।
लोभे व्रजवासीर भावे करे अनुगति ।
शास्त्रयुक्ति नाहि माने रागानुगार प्रकृति ।
वाह्य आन्तर इहार दुइत साधन ।
वाह्ये साधक देहे करे श्रवण कीर्त्तन ।
मने निज सिद्ध देह करिया भावन ।।
रात्रि दिने करे व्रजे कृष्णेर सेवन ।
निजाभीष्ट कृष्णप्रेष्ठ पाछेत लागिया ।
निरन्तर सेवा करे अन्तर्मना हञा ।
दास सखा पित्रादि प्रेयसीर गण ।
रागमार्गे निज निज भावेर गणन ।
एइमत करे सेवा रागानुगा भक्ति ।
कृष्णेर चरणे तार उपजये प्रीति ।
प्रेमाङ्कुरे रति भाव हय दुइ नाम ।
याहा हैते वश हन श्रीभगवान ।।

विभिन्न भक्तका लक्षण

शान्त—

कृष्णनिष्ठा तृष्णात्याग शान्तेर दुइ गुणे ।

दास्य—

शान्तेर गुण दास्ये आछे अधिक सेवन ।
शान्तेर गुण दास्येर सेवन सख्ये दुइ हय ॥

सख्य–

विश्रम्भ प्रधान सख्य गौरवसम्भ्रमहीन ।
अतएव सख्य रसेर तिन गुण चिन्ह ॥

वात्सल्य–

वात्सल्ये शान्तेर गुण दास्येर सेवन ।
सेइ सेइ सेवनेर इँहा नाम पालन ॥
सख्येर गुण असङ्कोच अगौरव सार ।
ममता अधिक ताड़न भर्त्सन व्यवहार ॥
आपनाके पालक ज्ञान कृष्णे पाल्य ज्ञान ।
चारि रसेर गुणे वात्सल्य अमृत समान ।

मधुर रस—

मधुर रसे कृष्णनिष्ठा सेवा अतिशय ।
सख्ये असङ्कोच लालन ममताधिक्य हय ॥
कान्तभावे निजाङ्ग दिया करेन सेवन ।
अतएव मधुर रसे हय पञ्च गुण ॥

उत्तम भक्तका लक्षण—म० ८

प्रभु कहे कृष्णे तोमार गाढ़ प्रेम हय।
प्रेमेर स्वभाव एइ जानिह निश्चय ॥
महाभागवत देखे स्थावर जङ्गम।
ताहा ताहा हय तार श्रीकृष्णस्फुरण।
स्थावर जङ्गम देखे ना देखे तार मूर्त्ति।
सर्व्वत्र हय निजइष्टदेव स्फूर्त्ति ॥

भक्तका देह—अ० ४

प्रभु कहे वैष्णव देह प्राकृत कभु नय।
अप्राकृत देह भक्तेर चिदानन्दमय ॥
दीक्षाकाले भक्त करे आत्मसमर्पण।
सेइ काले कृष्ण ताँरे करेन आत्मसम।

रासलीला श्रवण—अ० ५

श्रीप्रद्युम्न प्रति—

व्रजवधू सने कृष्णेर रासादि विलास।
येइ जन कहे शुने करिया विश्वास ॥
हृद्रोग काम तार तत्काले हय क्षय।
तिनगुणे क्षोभ नहे महा धीर हय।

मन्दिरका चक्र को प्रणाम—म० ११

श्रीहरिदास प्रति—

एइ स्थाने रह कर नाम संकीर्त्तन।

प्रति दिन आमि आसि करिव मिलन।
मन्दिरेर चक्र देखि करह प्रणाम ॥

दैन्य (म० १६)

श्रीसनातन प्रति–

उत्तम हञा हीन करि मान आपनारे।
अचिरे करिवे कृष्ण तोमारे उद्धारे।

दारुब्रह्म (म० १५)

श्रीसार्व्वभौम प्रति–

सार्व्वभौम कर दारुब्रह्म सेवन।

जलब्रह्म (म० १५)

श्रीवाचस्पति प्रति–

वाचस्पति कर जलब्रह्मेर सेवन।

श्रेष्ठ क्या ? (म० ८)

श्रीरामानन्द राय प्रति–

प्रभु कहे कोन विद्या विद्या मध्ये सार
राय कहे कृष्णभक्ति विना विद्या नाहि आर ॥
कीर्त्तिगण मध्ये जीवेर कोन वड़ कीर्त्ति ?
कृष्ण प्रेम भक्त वलि यार हय ख्याति।
सम्पत्तिर मध्ये जीवेर कोन सम्पत्ति गणि ?
राधाकृष्णे प्रेम यार सेइ वड़ धनी।
दुःख मध्ये कोन दुःख हय गुरुतर ?

कृष्ण भक्त विरह विना दुःख नाहि आर ॥
मुक्त मध्ये कोन जन मुक्त करि मानि ।
कृष्णप्रेम यार सेइ मुक्त शिरोमणि ॥
गान मध्ये कोन गान जीवेर निजधर्म्म ?
राधाकृष्णेर प्रेमकेलि येइ गीतेर मर्म्म ।
श्रेयो मध्ये कोन श्रेयो जीवेर हय सार ?
कृष्णभक्त सङ्ग विना श्रेयो नाहि आर ।
काहार स्मरण जीव करे अनुक्षण ?
कृष्णनाम गुण लीला प्रधान स्मरण ध
ध्येय मध्ये जीवेर कर्त्तव्य कोन ध्यान ?
राधाकृष्ण पदाम्वुज ध्यान प्रधान ।
सर्व्वत्यजि जीवेर कर्त्तव्य काँहा वास ?
व्रजभूमि वृन्दावन याँहा लीला रास ।
श्रवण मध्ये जीवेर कोन श्रेष्ठ श्रवण ?
राधाकृष्ण प्रेम लीला कर्णरसायन ।
उपास्येर मध्ये कोन उपास्य प्रधान ?
श्रेष्ठ उपास्य युगल राधाकृष्ण नाम ।
मुक्ति भुक्ति वाञ्छे येइ काँहा दोँहार गति ?
स्थावर देह देवदेह यैछे अवस्थिति ।

रघुनाथ उपाध्याय प्रति—म० १९

प्रभु कहे उपाध्याय श्रेष्ठ मान काय ?
" श्याममेव परं रूपं " कहे उपाध्याय ।

श्यामरूपेर वासस्थान श्रेष्ठ मान काय ?
" पुरी मधुपुरी वरा " कहे उपाध्याय ।
वाल्य पौगण्ड कैशोर श्रेष्ठ मान काय ?
" वयः कैशोरकं ध्येयं " कहे उपाध्याय ।
रसगण मध्ये तुमि श्रेष्ठ मान काय ?
" आद्य एव परो रसः " कहे उपाध्याय ।
प्रभु कहे भाल तत्त्व शिखाइला मोरे ।
एत वलि श्लोक पड़े गद्‌गद स्वरे ।

विधि व्यवस्था (म० २४)

श्रीसनातन शिक्षा—

प्रभु कहे ये करिते करिवे तुमि मन ।
कृष्ण सेइ सेइ तोमाय करावेन स्फुरण ।।
तथापि सूत्ररूप शुन दिग् दरशन ।
सर्व्वकारण लिखि आदौ गुरु आश्रयण ।
गुरु लक्षण, शिष्य लक्षण दुँहार परीक्षण ।
सेव्य भगवान सव मन्त्र विचारण ।
मन्त्र अधिकारी मन्त्र शुद्‌ध्यादि शोधन ।
दन्तधावन स्नान सन्ध्यादि वन्दन ।
गुरुसेवा उद्‌ध्वंपुण्ड्र चक्रादि धारण ।
गोपीचन्दन मालाधृति तुलसी आहरण ।
वस्त्र पीठ गृह संस्कार कृष्ण प्रवोधन ।
पञ्च षोड़श पञ्चाशत् उपचारे अर्च्चन ।

पञ्चकाल पूजा आरति कृष्णेर भोजन शयन ।
श्रीमूर्त्ति लक्षण आर शालग्राम लक्षण ।
कृष्णक्षेत्र यात्रा कृष्णमूर्त्ति दरशन ।
नाम महिमा नामापराध दूरे वर्ज्जन ।
वैष्णव लक्षण सेवापराध खण्डन ।
शङ्ख जल गन्ध पुष्प धूपादि लक्षण
जप स्तुति परिक्रमा दण्डवत् वन्दन ।
पुरश्चरण विधि कृष्ण प्रसाद भोजन ।
अनिवेद्य त्याग वैष्णव निन्दादि वर्ज्जन ।
साधुलक्षण साधुसङ्ग साधुसेवन ।
असत्सङ्ग त्याग श्रीभागवत श्रवण ।
दिनकृत्य पक्षकृत्य एकादश्यादि विवरण ।
मासकृत्य जन्माष्टम्यादि विधि विचारण ।
एकादशी जन्माष्टमी वामन द्वादशी ।
श्रीरामनवमी आर नृसिंह चतुर्द्दशी ।
एइ सवार विद्धात्याग अविद्धाकरण ।
अकरणे दोष कैले भक्ति लम्भन ।
सर्व्वत्र प्रमाण दिवे पुराण वचन ।
श्रीमूर्त्ति विष्णुमन्दिर करण लक्षण ।
सामान्य सदाचार आर वैष्णव आचार ।
कर्त्तव्याकर्त्तव्य स्मार्त्त व्यवहार ।

श्रीईश्वर कृपा—म० १०

प्रभु कहे ईश्वर हय परम स्वतन्त्र ।

ईश्वरेर कृपा नहे वेद परतन्त्र ।
ईश्वरेर कृपा जाति कुलादि ना माने ।
विदुरेर घरे कृष्ण करिला भोजने ।
स्नेह लेशापेक्षा मात्र ईश्वर कृपार ।
स्नेह वश हइया करे स्वतन्त्र आचार ॥
मर्य्यादा हैते कोटी सुख स्नेह आचरणे ।

कृपाका फल––म० ११

यारे कृपा करि करे हृदये प्रेरण ।
कृष्णाश्रये छाड़े सेइ वेद लोक धर्म्म ॥
कृष्ण यदि कृपा करेन कोन भाग्यवाने ।
गुरु अन्तर्य्यामिरूपे शिखाय आपने ।

भक्तिका प्राधान्य—म० २२

पूर्व्व आज्ञा वेदधर्म्म कर्म्म योग ज्ञान ।
सव साधि शेषे एइ आज्ञा वलवान ।
एइ आज्ञा वले भक्त श्रद्धा यदि हय ।
सर्व्वकर्म्म त्याग करि से कृष्ण भजय ।

गुरु कौन? म० ११

याहा हैते कृष्ण भक्ति सेइ गुरु हय ।

अधिकार विचार—म० १५

श्रीमुकुन्द प्रति–

तोमार ये कार्य्य धर्म्मे धन उपार्ज्जन ।

रघुनन्दनेर कार्य्य श्रीकृष्ण सेवन ।

आर्त्ति—अ० १४

उड़िया एक स्त्री भिड़े दर्शन ना पात्रा ।
गरुड़े चड़ि देखे प्रभुर क़ान्धे पद दिया ।।
देखि गोविन्द आस्तेव्यस्ते स्त्रीके वर्ज्जिला ।
तारे नामाइते प्रभु गोविन्दे निषेधिला ।
आदिवस्या ! एइ स्त्रीके ना कर वर्ज्जन ।
करुक यथेष्ट जगन्नाथ दरशन ।
आस्ते व्यस्ते सेइ नारी भूमिते नामिला ।
महाप्रभु देखि ताँर चरण वन्दिला ।।
तार आर्त्ति देखि प्रभु कहिते लागिला ।
एत आर्त्ति जगन्नाथ आमारे ना दिला ।
जगन्नाथे आविष्ट इहार तनु मन प्राणे ।
मोर कान्धे पद दिआछे ताहा नाहि जाने ।
अहो भाग्यवती एइ वन्द इहार पाय
इहार प्रसादे ऐछे आमार वा हय ।।
पूर्व्वे आमि यवे कैल जगन्नाथ दरशन ।
जगन्नाथ देखि साक्षात् व्रजेन्द्र-नन्दन ।।
स्वप्नदर्शनावेशे तद्रूप हैल मन ।
यांहा ताँहा देखि सर्व्वत्र मुरली-वदन ।
हा हा कृष्ण ! प्राणनाथ व्रजेन्द्र—नन्दन (अ० १२
काँहा याङ ? काहाँ पाङ ? मुरली वदन ।।

काँहा करों ? काँहा याङ ? काँहा गेले कृष्ण पाङ ?
कृष्ण विना प्राण मोर याय ।।(अ० १७)
प्रभु कहे उद्वेगे घरे ना पारि रहिते । अ० १६
द्वार चाहि वुलि शीघ्र वाहिरे याइते ।
द्वार नाहि पाइ मुख लागे चारिभिते ।
क्षत हय रक्त पड़े ना पारि याइते ।
उन्माद दशाय प्रभुर स्थिर नहे मन ।
ये वले ये करे सव उन्माद लक्षण ।
सखि हे ! कोथा कृष्ण ? कराओ दर्शन । अ० १६
क्षणेक याँहार मुख ना देखिले फाटे वुक
शीघ्र देखाओ ना रहे जीवन ।

कर्म्मफल—अ० २

हरिदास काँहा यदि श्रीवास पुछिल ।
स्व-कर्म्मफल-भुक्-पुमान् प्रभु उत्तरिल ।

श्रीगौर तत्त्व-म० ८

निज स्वरूप—

गौरदेह नहे मोर राधाङ्ग स्पर्शन ।
गोपेन्द्रसुत विना तिँहो ना स्पर्श अन्यजन ।।
ताँर भावे भावित आमि करि आतममन ।
तवे निज माधुर्य्य रस करि आस्वादन ।

सेवा—अ० १०

गोविन्द मने कहे आमार सेवार नियम ।

अपराध हउक किवा नरके गमन ।
सेवा लागि कोटि अपराध नाहि गणि ।
स्वनिमित्त अपराधाभासे भय मानि ।

समुद्र–अ० ११

हरिदासे समुद्र जले स्नान कराइल ।
प्रभु कहे समुद्र एइ महातीर्थ हइल ।।

श्रीजगन्नाथ दर्शण–अ० १४

यावत् काल दर्शन करे गरुड़ेर पाछे ।

श्रीव्रज–अ० १

कृष्णके वाहिर नाहि करिह व्रज हैते ।
व्रज छाड़ि कृष्ण कभु ना यान काँहाते ।

श्रीअधरामृत अ० १६

प्रभु कहे एइ ये दिले कृष्णाधरामृत ।
ब्रह्मादि दुर्ल्लभ एइ निन्दये अमृत ।
कृष्णेर ये भुक्तशेष तार फेला नाम ।
तार एक लव पाय सेइ भाग्यवान ।
सामान्य भाग्य हैते तार प्राप्ति नाहि हय ।
कृष्णेर याते पूर्ण कृपा सेइ ताहा पाय ।
सुकृति शब्दे कहे कृष्णकृपा हेतु पुण्य ।
सेइ यार हय फेला पाय सेइ धन्य ।
प्रभु कहे एइ सब हय प्राकृत द्रव्य ।

ऐक्षव कर्पूर मरिच एलाचि लवङ्ग गव्य ।
रसवास गुड़त्वक आदि यत सव ।
प्राकृत वस्तुर स्वाद सवार अनुभव ॥
से से द्रव्य एत स्वाद गन्ध लोकातीत ।
आस्वाद करिया देख सवार प्रतीत ॥

सात्त्विक सेवा अ० ६

श्रीरघुनाथ प्रति—

प्रभु कहे एइ शिला कृष्णेर विग्रह ।
इँहार सेवा कर तुमि करिया आग्रह ॥
एइ शिलार कर तुमि सात्त्विक पूजन ।
अचिराते पावे तुमि कृष्णप्रेमधन ॥
एक कुँजा जल आर तुलसी मञ्जरी ।
सात्त्विक सेवा एइ शुद्धभावे करि ।
दुइ दिगे दुइ पत्र मध्ये कोमल मञ्जरी ।
एइमत अष्टमञ्जरी दिवे श्रद्धा करि ।

श्रीकृष्ण कर्णामृत म० ९

कर्णामृत शुनि प्रभुर आनन्द इहल ।
आग्रह करिया पुँथि लेखाइया लइल ।

ब्रह्मसंहिता

सिद्धान्त शास्त्र नाहिब्रह्म संहिता समान ।
गोविन्द महिमाज्ञानेर परम कारण ।

पट्टडोरी (म० १४)

श्रीरामानन्दवसु प्रति–

एइ पट्टडोरीर तुमि हओ यजमान।
प्रतिवर्षे आनिव डोरि करिया निर्म्माण।
एइ पट्टडोरीते हय शेषेर अधिष्ठान।
दशमूर्त्ति धरि यिहो सेवे भगवान।

भक्त स्वभाव–अ० ३

भक्तेर स्वभाव अज्ञेर दोष क्षमा करे।
कृष्णस्वभाव भक्त निन्दा सहिते ना, पारे।।

श्रीरथयात्रा—म० १४

यद्यपि जगन्नाथ करे द्वारका विहार।
सहज प्रकट करे परम उदार।।
तथापि वत्सर मध्ये हय एकवार।
वृन्दावन देखिवारे उत्कण्ठा अपार।।
वाहिर हइते करे रथयात्रा छल।
सुन्दराचल याय प्रभु छाड़ि नीलाचल।
नाना पुष्पोद्याने तथा खेले रात्रिदिने।
लक्ष्मीदेवी सङ्गे नाहि लय कि कारणे ?
स्वरूप कहे शुन प्रभु कारण इहार।
वृन्दावन क्रीड़ाते लक्ष्मीर नाहि अधिकार।।
वृन्दावन लीलाय कृष्णेर सहाय गोपीगण।
गोपीगण विना कृष्णेर हरिते नारे मन।

प्रभु कहे ' यात्रा छले कृष्णेर गमन ।
सुभद्रा आर वलदेव सङ्गे दुइजन ॥
गोपी सङ्गे यत लीला करे उपवने ।
निगूढ़ कृष्णेर भाव केह नाहि जाने ।

❊ ❊ ❊ ❊

❊ श्रीश्रीगौरगदाधरौ जयतः ❊

श्रीश्रीचैतन्य सूक्ति सुधाकरः

(श्री चैतन्य भागवत)

मातृभक्ति (म० २७)

जननीरे देखि प्रभु धरि तान कर ।
वसिया कहेन वहु प्रवोध उत्तर ।
विस्तर करिला तुमि आमार पालन ।
पड़िलाम शुनिलाम तोमार कारण ॥
आपनार तिलादर्धेक नाहि कैले सुख ।
आजन्म आमार तुमि वाड़ाइले भोग ।
दण्डे दण्डे यत स्नेह करिला आमार ।
आमि कोटी कल्पेओ नारिव शोधिवार ।
तोमार प्रसादे मा ताहार प्रतिकार ।
आमि पुनः जन्म जन्म ऋणी से तोमार ।
यत किछु विष्णुभक्ति सम्पत्ति आमार । (अ० ९

आइर प्रसादे सव, द्विधा नाहि आर।
ताँहार इच्छाय आमि आछि पृथिवीते।
ताँर ऋण आमि कभु नारिव शुधिते।
आइ स्थाने वद्ध आमि शुन दामोदर।
आइरे देखिते आमि आछि निरन्तर।

गृहस्थेर कर्त्तव्य(आ०१२)

अतिथि सेवा–

गृहस्थेरे महाप्रभु शिखायेन धर्म्म॥
अतिथिर सेवा गृहस्थेर मूल कर्म्म॥
गृहस्थ हइया यदि अतिथि ना करे।
पशुपक्षी हइते अधम वलि तारे॥
यार वा ना थाके किछु पूर्व्वादृष्ट दोषे।
सेह तृण जल भूमि दिवेक सन्तोषे॥

ज्येष्ठ-भ्रातार-सेवा अ० ५

श्रीराम पण्डित प्रति—

ज्येष्ठ भाइ श्रीवासेरे तुमि सर्व्वथाय।
सैविवे ईश्वर वुद्ध्ये आमार आज्ञाय।

मकरध्वज प्रति–

मकरध्वज कर प्रति श्रीगौराङ्गचन्द्र।
वलिलेन सेविह तुमि श्रीराघवानन्द॥

वधूर कर्त्तव्य आ० १२

श्रीलक्ष्मीदेवी प्रति—

लक्ष्मी प्रति वलिलेन श्रीगौर सुन्दर।
आइर सेवन करिवारे निरन्तर॥

प्रदक्षिण (अ० ११)

श्रीअद्वैत प्रति—

प्रभु वोले सामग्री शुनह हारिवार।
तुमि ये प्रदक्षिण करिला व्यवहार॥
यतक्षण तुमि पृष्ठ दिगेरे चलिला।
ततक्षण तोमार से दर्शन नहिला॥
आमि यतक्षण धरि देखि जगन्नाथ।
आमार लोचन आर ना याय कोथात॥
कि दक्षिणे किवा वामे किवा प्रदक्षिणे।
आर नाहि देखो जगन्नाथ मुख विने॥

गङ्गार महिमा अ० १

प्रेमरस स्वरूप तोमार दिव्य जल।
शिव से तोमार तत्त्व जानेन सकल।
सकृत् तोमार नाम करिले श्रवण।
तार विष्णु भक्ति हय कि पुनः भक्षण।
तोमार प्रसादे से श्रीकृष्ण हेन नाम।
स्फुरये जीवेर मुखे इथे नाहि आन॥
कीट पक्षी शृगाल कुक्कुर यदि हय।

तथापि तोमार यदि निकटे वसय ॥
तथापि ताहार यत भाग्येर उपमा ।
अन्यत्रेर कोटीश्वर नहे तार समा ।
पतित तारिते से तोमार अवतार ॥
तोमार समान तुमि वइ नाहि आर ॥

युगधर्म्म–नाम आ० १२

तपन मिश्र प्रति–

अतएव कलियुगे नाम यज्ञ सार ।
आर कोन धर्म्म कैले नाहि हय पार ॥
रात्रि दिन नाम लय खाइते शुइते ।
ताहार महिमा वेदे नाहि पारे दिते ॥
शुन मिश्र कलि युगे नाहि तपयज्ञ !
येइ जन भजे कृष्ण तार महाभाग्य ॥
अतएव गृहे तुमि भज कृष्ण गिया ।
कुटिनाटि परिहरि एकान्त हइया ॥
साध्य साधन तत्त्व ये किछु सकल ।
हरिनाम संकीर्त्तने मिलिवे सकल ।

श्रीगदाधर प्रति—म० १

प्रभु वले गदाधर तुमि से सुकृति ।
शिशु हैते कृष्णेते करिला दृढ़ मति ॥
आमार से हेन जन्म गेल वृथा रसे ।
पाइनु अमूल्य निधि गेल दीन दोषे ॥

कृष्णनाम—म० १

धरिया सवार गला वले विश्वम्भर ।
कृष्ण कृष्ण भाइ सव वल निरन्तर ।।

छात्रगण प्रति-

प्रभु वले सर्व्वकाल सत्य कृष्ण नाम ।
सर्व्व शास्त्रे कृष्ण वहि ना वलये आन ।
हर्त्ता कर्त्ता पालयिता कृष्ण से ईश्वर ।
अज भव आदि सव कृष्णेर किङ्कर ।।

श्रीकृष्ण ही भजनीय

" शुन भाइ सव सत्य आमार वचन ।
भजह अमूल्य कृष्ण पाद पद्म धन ।।
चण्डाल चण्डाल नहे यदि कृष्ण वले ।
विप्र नहे विप्र यदि असत् पथे चले ।।

भक्ति का प्रभाव

माता प्रति-

कृष्ण सेवकेर माता कभु नाहि नाश ।
कालचक्र डराय देखिया कृष्ण-दास ।।

छात्रगण प्रति—

तोमरा सकले लह कृष्णेर शरण ।
कृष्ण नामे पूर्ण होक सवार वदन ।।
निरवधि श्रवणे शुनह कृष्ण नाम ।

कृष्ण हउक तोमा सवाकार धनप्राण ।

विद्या का सार

माता प्रति–

प्रभु वले आजि पड़िलाम कृष्ण नाम ।
सत्य कृष्ण चरण कमल गुणधाम ।
सत्य कृष्ण नाम गुण श्रवण कीर्त्तन ।
सत्य कृष्णचन्द्रेर सेवक ये ये जन ।
सेइ शास्त्र सत्य कृष्णभक्ति कहे याय ।
अन्यथा हइले शास्त्र पाषण्डत्व पाय ।

श्रीकृष्ण ही भजनीय

यावत् आछये जीव देहेते आसक्ति ।
तावत् करह कृष्ण पाद–पद्मे भक्ति ।।
कृष्ण माता कृष्ण पिता कृष्ण प्राणधन ।
चरणे धरिया बलि कृष्णे देह मन ।

छात्रगण प्रति–

कृष्णवर्ण एक शिशु मुरली वाजाय ।
सवे देख भाइ सेइ वले सर्व्वथाय ।
यत शुन श्रवणे सकल कृष्ण नाम ।
सकल भुवन देख गोविन्देर धाम ।

धातु

धातु सूत्र वाखानह वले से पड़ ुया ।

प्रभु वले वाखानि से शुन मन दिया।
सर्व्वशक्ति-समन्वित प्रभु भगवान।
करिलेन सूत्र व्याख्या ये हय प्रमाण ॥

कृष्ण शक्ति।

धातु-

(प्रभु वले श्रीकृष्णेर शक्ति नाम यार)
धातु सूत्र वाखानि शुनह भाइगण।
देखि कार शक्ति आछे करुक खण्डन ॥
यत देख राजा दिव्य दिव्य कलेवर।
कनक भूषित गन्ध चन्दने सुन्दर ॥
यम लक्ष्मी वचने याहारे लोके कय।
धातु विने शुन तार ये अवस्था हय।
कोथा याय सर्व्वाङ्गेर सौन्दर्य चलिया।
केह भस्म हय, कारे एड़ेन पुँतिया।
सर्व्व देहे धातु रूपे वैसे कृष्ण-शक्ति।
ताहा सने कर स्नेह ताहाने से भक्ति।
भ्रम रसे अध्यापक ना वुझये इहा।
हय नय भाइ सव वुझ मन दिया ॥
एवे यारे नमस्करि करि मान्य ज्ञान।
धातु गेले तारे परशिले करि स्नान।
ये वापेर कोले पुत्र थाके महा सुखे।
धातु गेले सेइ पुत्र अग्नि देय मुखे ॥

धातु संज्ञा कृष्ण-शक्ति वल्लभ सवार।
देखि इहा दुषुक आछये शक्ति कार॥
एमत पवित्र पूज्य ये कृष्णेर शक्ति।
हेन कृष्णे भाइ सव कर दृढ़ भक्ति।
वल कृष्ण भज कृष्ण शुन कृष्ण नाम।
अहर्निश श्रीकृष्ण चरण कर ध्यान॥

श्रीकृष्ण नाम का प्रभाव—म० १९

बाहु तुलि जगतेरे वले गौरधाम।
अनिन्दुक हइ सवे वोल कृष्ण नाम।
अनिन्दुक हइये सकृत् कृष्ण वोले।
सत्य सत्य मुञि तारे उद्धारिव हेले।

नाम मन्त्र—म० २३

श्रीनवद्वीपवासी प्रति—

आपने सभारे प्रभु करे उपदेशे।
कृष्ण नाम महा मन्त्र शुनह हरिषे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
प्रभु वोले कहिलाङ एइ महा मन्त्र।
इहा जप गिया सभे करिया निर्वन्ध॥
इहा हैते सर्व्व सिद्धि हइवे सभार!
सर्व्वक्षण वल इथे विधि नाहि आर॥

दश पाँच मिलि निज दुयारे वसिया ।
कीर्त्तन करह सभे हाते तालि दिया ।
" हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः ।
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन " ।
संकीर्त्तन कहिल ए तोमा सभाकारे ।
स्त्री पुत्र वापे मिलि कर गिया घरे ।

श्रीकृष्ण ही भजनीय (म० १३)

श्रीनित्यानन्द एवं श्रीहरिदास के प्रति–

शुन शुन नित्यानन्द शुन हरिदास ।
सर्व्वत्र आमार आज्ञा करह प्रकाश ।
प्रति घरे घरे गिया कर एइ भिक्षा ।
वोल कृष्ण भज कृष्ण कर कृष्ण शिक्षा ।
वोल कृष्ण गाओ कृष्ण भज कृष्ण नाम । म०२७
कृष्ण विनु केह किछु ना भाविह आन ।।
वोल कृष्ण भज कृष्ण शुन कृष्ण नाम । अ० ३
कृष्ण हउ सभार जीवन धन प्राण ।

उच्च कीर्त्तन–आ० १४

श्रीहरिदास की उक्ति–

उच्च करि लइले शतगुण पुण्य हय ।
दोष त ना कहे शास्त्रे गुण से वर्णय ।
पशु पक्षी कीट आदि वलिते ना पारे ।

शुनिलेइहरि नाम तारा सव तरे।
जपिले से कृष्ण नाम आपनि से तरे।
उच्च संकीर्त्तने पर उपकार करे।
अतएव उच्च करि कीर्त्तन करिले।
शत गुण फल हय सर्व्वशास्त्रे वले।
जपकर्त्ता हैते उच्च संकीर्त्तन-कारी।
शतगुणाधिक फल पुराणेते धरि।

कीर्त्तन—म० ८

प्रभु वोले भाइ सव शुन मन्त्र सार।
रात्रि केने मिथ्या याय आमा सभाकार।
आजि हैते निर्वन्धित करह सकल।
निशाय करिव सभे कीर्त्तन मङ्गल।
संकीर्त्तन करिया सकल गण सने।
भक्ति स्वरूपिणी सङ्गा करिव मज्जने।
जगत उद्धार हउ शुनि कृष्ण नाम।
परमार्थे तोमारा सभार धन प्राण॥

दिग्विजयी पण्डित प्रति—

मन दिया मुझ देह छाड़िया चलिले।
धन वा पौरुष सङ्गे किछु नाहि चले।
एतेक महान्त सव सर्व्व परिहरि।
करेन ऐश्वर सेवा दृढ़ चित्त करि।

एतेक छाड़िया विप्र सकल जञ्जाल ।
श्रीकृष्ण चरण गिया भजह सकाल ॥

शिष्य प्रति—म० १

शिष्य वले पण्डित उचित व्याख्या कर ।
प्रभु वोले सर्व्वक्षण कृष्ण कृष्ण स्मर ।
कृणेर भजन करि सम्यक आम्नाय ।
आदि अन्त मध्ये कृष्ण भजन वुझाय ॥

भक्ति का प्राधान्य—म० १०

मुञि सत्य करियाछो आपनार मुहे ।
मोर भक्ति विने कोन कर्म्मे किछु नहे ॥

रजक के सम्वन्ध में—

पाइलेक महाभाग्ये मोर दरशने ।
ना पाइल सुख भक्ति शून्येर कारणे ।

शरणागति—म० २३

श्रीनिवास प्रति—

पयः पाने कभु मोरे केह नाहि पाय ।
चण्डालेहो मोहार शरण यदि लय ॥
सेहो मोर मुञि तार जानिह निश्चय ।
सन्न्यासीओ यदि मोर ना लय शरण ।
सेहो मोर नहे सत्य वलिनु वचन ।

भक्तिका श्रेष्ठत्व–म० २३

श्रीनिवास प्रति–

प्रभु वले तप करि ना करिह वल ।
विष्णु भक्ति सर्व्व श्रेष्ठ जानिह केवल ॥

कुशल–अ० ६

कुशल शब्देर अर्थ व्यक्त करिवारे ।
भक्ति आछे करि वार्त्ता लयेन सभारे ।
भक्ति योग थाके तवे सकल कुशल ।
भक्ति विना राजा हइलेओ अमङ्गल ॥
धन यश भोग यार आछये सकल ।
भक्ति यार नाइ तार सव अमङ्गल ।
अद्य खाद्य नाहि यार दरिद्रेर अन्त ।
विष्णु भक्ति थाकिले सेइ धनवन्त ।
प्रभु वोले यार मुखे नाहि भक्ति कथा ।
तप शिखा सूत्रत्याग तार सव वृथा ।

श्रीजगन्नाथ दर्शन—अ० २

प्रभु वोले शुन आमार व्याख्यान ।
जगन्नाथ आमि देखिलाङ विद्यमान ॥
जगन्नाथ देखि चित्ते हइल आमार ।
धरि आनि वक्षमाझे मुञि आपनार ।
धरिते गेलाम मात्र जगन्नाथ आमि ।

तवे कि हइल शेषे आर नाहि जानि ॥
दैवे सार्व्वभौम आजि आछिल निकटे ।
अतएव रक्षा हैल ए महा सङ्कटे ॥
आजि हैते एइ आमि वलि दढ़ाइया ।
जगन्नाथ देखिलाङ वाहिरे थाकिया ।
अभ्यन्तरे आर आमि प्रवेश नहिव ।
गरुड़ेर पाछे रहि ईश्वर देखिव ।

आर्त्ति—म० १०

जाति कुल क्रिया धने किछु नाहि करे ।
प्रेमधन आर्त्ति विना ना पाय कृष्णेरे ।
प्रभु वोले मोर दुःख करह खण्डन ।
आनि देह मोरे नन्द–गोपेन्द्र–नन्दन ॥
कोथा कृष्ण ! कोथा कृष्ण ! वोले अनुक्षण ।
कृष्णरे ! वापरे ! मोर जीवन श्रीहरि ।
कोन दिके गेला मोर प्राण कैले चुरि ॥
कोथा कृष्ण ? वलि पड़िलेन मुक्तकेशे ।
कृष्ण वलि कान्दिते लागिला वहुतर ।
कृष्णरे ! प्रभुरे ! मोर कोन दिके गेला ।

त्याज्य कि ?

विषय—

वन्दि थाक हेन आशीर्व्वाद नाहि करि । आ०१४
विषय पासर अहर्निश वल हरि ॥

श्रीमुरारि प्रति—

ये करिला मुरारि ना हय व्यवहार।
व्यतिक्रम करिया करिला नमस्कार ॥

वैष्णव वेश—अ० १३

तिलक धारण–

तिलक ना थाके यदि विप्रेर कपाले।
से कपाल श्मशान सदृश वेदे वले ॥

विप्र—पादोदक—आ० १५

तवे प्रभु व्यवस्थिला औषध आपने।
सर्व्व दुःख खण्डे विप्रपादोदक पाने।

निरपेक्षता-म० २

स्वामीहीना देवहूति जननी छाड़िया।
चलिला कपिल प्रभु निरपेक्ष हइया।
व्यास हेन वैष्णव जनक छाड़ि शुक।
चलिला उलटि नाहि चाहिलेन मुख ॥
शची हेन जननी छाड़िया एकाकिनी।
चलिलेन निरपेक्ष हइ न्यासीमणि ॥

कर्म्मफल--म० २५

के काहार वाप प्रभु के कार नन्दन।
सवे आपनार कर्म्म करये भुञ्जन।

लक्षेश्वर--अ० २५

प्रभु वोले जान लक्षेश्वर वलि कारे ।
प्रतिदिन लक्ष नाम ये ग्रहण करे ॥
से जनेर नाम आमि वलि लक्षेश्वर ।
तथा भिक्षा आमार ना याइ अन्य घर ॥

श्रीतुलसी--अ० ९

प्रभु वोले मुञि तुलसीरे ना देखिले ।
भाल नाहि वासो येन मत्स्य विना जले ॥
तवे चले संख्या नाम करिते ग्रहण ।
तुलसी लइया अग्रे चले एक जन ।
पश्चाते चलेन प्रभु तुलसी देखिया ॥
पड़ये आनन्द धारा श्रीअङ्ग वहिया ॥

भागवत धर्म्म--म० ५

सर्व्वभूते आछेन श्रीविष्णु ना जानिया ।
विष्णु-पूजा करे अति प्राकृत हइया ।
एक हस्ते येन विप्र चरण पाखाले ।
आर हस्ते ढेला मारे माथाय कपाले ।
श्रद्धा करि मूर्त्ति पूजे भक्त ना आदरे ।
मूर्खनीच पतितेरे दया नाहि करे ॥
एक अवतार भजे ना भजये आर ।
कृष्ण रघुनाथे करे भेद व्यवहार ॥
वलराम शिव प्रति प्रीति नाहि करे ।
भक्ताधम शास्त्रे कहे एसव जनारे ।

ब्राह्मणादि कुक्कुर चण्डाल अन्त करि ।
दण्डवत् करिवेक वहु मान्य करि ।।
एइ से वैष्णव धर्म्म सभारे प्रणति ।
सेइ धर्म्म ध्वजी यार इथे नाहि रति ।।

भक्त पूजा--अ० ६

मोर पूजा मोर नाम ग्रहण ये करे ।
मोर भक्त निन्दे यदि तारे विघ्न धुरे ।
मोर भक्त प्रति प्रेमभक्ति करे ये । अ० ६
निः संशय वलिलाम मोरे पाय से ।
मोर भक्त ना पूजे आमारे पूजे मात्र ।
से दाम्भिक नहे मोर प्रसादेर पात्र ।।

श्रीअद्वैतादि प्रति--म० १९

मोर एइ सत्य सभे शुन मन दिया ।
येइ मोरे पूजे मोर सेवक लङ्घिया ।
से अधम जने मोरे खण्ड खण्ड करे ।
तार पूजा मोर गाये अग्नि हेन पड़े ।
येइ मोर दासेर सकृत् निन्दा करे ।
मोर नाम कल्पतरु ताहारे संहारे ।
अनन्त ब्रह्माण्डे यत सव मोर दास ।
एतेके ये परहिंसे सेइ याय नाश ।।
तुमित आमार निज देह हइते वड़ ।
तोमारे लङ्घिया दैवे नाश हय दढ़ ।

सन्न्यासीओ यदि अनिन्दुक निन्दा करे।
अधः पाते याय सर्व्व धर्म्म घुचे तारे।
परमार्थे ईश्वरेर केह भिन्न नय। (अ०४)
विशेष ये जन तारे सर्व्वभावे भजे।
सर्व्वकाल तान अन्न आपनेई खोँजे।
अभेद दृष्टिते कृष्ण वैष्णव भजिया।
ये कृष्ण चरण सेवे से याय तरिया॥

महतका आचरण--अ० ६

शुन विप्र यदि महा अधिकारी हय।
तवे तान दोष गुण किछु ना जन्मय॥
पद्मपत्रे कभु येन ना लागये जल।
एइमत नित्यानन्द स्वरूप निर्म्मल।
परमार्थे कृष्णचन्द्र ताहान शरीरे।
निश्चय जानिह विप्र सर्व्वदा विहरे।
अधिकारी वइ करे ताहान आचार।
दुःख पाय सेइ जन पाप जन्मे तार।
रुद्र विना अन्य यदि करे विषपान।
सर्व्वथाय मरे सर्व्व पुराण प्रमाण।
एतेके ये ना जानिया निन्दे तान कर्म्म।
निज दोषे सेइ दुःख पाय जन्म जन्म।
गर्हितो करये यदि महा अधिकारी।
निन्दार कि दाय ताँरे हासिलेइ मरि।

भागवत हइते ए सब तत्त्व जानि ।
ताहो यदि बैष्णव गुरुर मुखे शुनि ।
ये दुस्कृति जन वैष्णवेर निन्दा करे । अ० ६
जन्म जन्म निरवधि सेई दु.खे मरे ।

महत का आचरण--अ० ९

सिद्ध वैष्णवेर अति विषम व्याभार ।
ना बुझिया निन्दि मरे सकल संसार ।
सवे इथे देखि एक महा प्रतीकार ।
सभारे करिव स्तुति विनय व्याभार ।

वैष्णव--म० १०

ये से कुले वैष्णवेर जन्म केने नहे ।
तथापि सर्व्वोतम सर्व्व शास्त्रे कहे ।

चापाल गोपाल प्रति--अ० ४

ये वैष्णव नामे हय संसार पवित्र ।
ब्रह्मादि गायेन येइ वैष्णव चरित्र ।
ये वैष्णव भजिले अचिन्त कृष्ण पाइ ।
ये वैष्णव पूजा हैते वड़ आर नाइ ।।
शेष रमा अज भव निज देह हैते ।
वैष्णव कृष्णेर प्रिय कहे भागवते ।
हेन वैष्णवेर निन्दा करे येइ जन ।
सेइ पाय दुःख जन्म जीवन मरण ।
विद्या कूल तप सब विफल ताहार ।

वैष्णव निन्दये ये ये पापी दुराचार।
पूजाओ ताहार कृष्ण ना करे ग्रहण।
वैष्णवेर निन्दा करे ये पापिष्ठ जन।
ये वैष्णव नाचिले पृथिवी धन्य हय।
यार दृष्टि मात्र दशदिगे पाप क्षय।
ये वैष्णव जन वाहु तुलिया नाचिते।
स्वर्गेर ओ सकल विघ्न घुचे भाल मते।
हेन महाभागवत श्रीवास पण्डित।
तुञि पापी निन्दा कैलि ताहान चरित॥
एतेके तोहोर कुष्ठ ज्वाला कोन काज।
मूल शास्ता पश्चात् आछेन धर्म्मराज॥

वैष्णव का जाति नहीं है--अ० १०

विद्यानिधि प्रति--

प्रभु वले तोर अपराधेर अन्त नाइ।
मोर जाति मोर सेवकेर जाति नाइ।
सकल जानिला तुमि रहि एक ठाञि।
तवे केन रहियाछ जाति नाशा स्थाने।
जाति राखि चल तुमि आपन भवने॥

अपराध--म० ४

सेवापराध--

सेवा विग्रहेर प्रति अनादर यार।

विष्णु स्थाने अपराध सर्व्वथा ताहार ॥

माधाइ प्रति--म० १३

प्रभु वले अपराध कैले तुमि वड़ ।
नित्यानन्द चरण धरिया गिया पड़ ॥

श्रीनिवास प्रति--म० २२

प्रभु वले उपदेश करिते से पारि ।
वैष्णवापराध आमि खण्डाइते नारि ।
ये वैष्णव स्थाने अपराध हय यार ।
पुनः सेइ क्षमिले से घुचे नारे आर ॥

चापाल गोपाल प्रति--अ० ४

चलकुष्ठ रोगी तुमि श्रीवासेर स्थाने ।
सत्वरे पड़ह गिया ताँहार चरणे ।
ताँर ठाञि तुमि करियाछ अपराध ।
निष्कृति तोमार तिँहो करिले प्रसाद ।
काँटा फूटे येइ मुखे सेइ मुखे याय ।
पाये काँटा फुटिले कि कान्धे वाहिराय ॥
सर्व्व महाप्रायश्चित्त ये कृष्णेर नाम ।
वैष्णवापराधे सेहो ना मिलये त्राण ॥

अपराध-खण्डन अ० ३

द्विज प्रति--

शुन द्विज विष करि ये मुखे भक्षण

सेइ मुखे करि यवे अमृत ग्रहण ।
विष हय जीर्ण देह हयत अमर ।
अमृत प्रभाव एवे शुन से उत्तर ।
ना जानिया तुमि यत करिला निन्दन ।
से केवल विष तुमि करिला भोजन ।
परम अमृत एवे कृष्ण गुण नाम ।
निरवधि सेइ मुखे कर तुमि पान ।
ये मुखे करिला तुमि वैष्णव-निन्दन ।
सेइ मुखे कर तुमि वैष्णव वन्दन ।
सभा हैते भक्तेर महिमा वाड़ाइया ।
सङ्गीत कवित्व भक्ति यत कर गिया ।
कृष्ण-यश–परानन्द-अमृते तोमार ।
निन्दा-विष यत सव करिव संहार ।
एइ सत्य कहि तोमा सभारे केवल ।
ना जानिया निन्दा येवा करिल सकल ॥
आर यदि निन्दा कर्म्म कभु ना आचरे ।
निरन्तर विष्णु वैष्णवेर स्तुति करे ।
ए सकल पाप घुचे एइ से उपाय ।
कोटी प्रायश्चित्ते अन्यथा नाहि याय ।

अपराध--न० १०

भक्तस्थान में-

मोर सेवकेर ठाञि यार अपराध ।

मोर दरशन सुख तार हय वाध ।
भक्तस्थाने अपराध कैले घुचे भक्ति ।
भक्तिर अभावे घुचे दरशन शक्ति ।

भक्तिस्थान में–

प्रभु वले औ त्रेटा यखन यथा याय ।
सेइ मत कथा कहि तथाइ मिशाय ।
वाशिष्ट पड़ये यवे अद्वैतेर सङ्गे ।
भक्तियोगे नाचे गाय तृण करि दन्ते ।
अन्य सम्प्रदाये गिया यखन साम्भाय ।
नाहि माने भक्ति जाठि मारये सदाय ।
भक्ति हइते वड़ आछे ये हइा वाखाने ।
निरन्तर जाठि मारे मोरे सेइ जने ।
भक्तिस्थाने इहार हैल अपराध ।
एतेके उहार हैल दरशन वाद ।।

वैष्णव निन्दा–अ० ४

वैष्णव सेवा—म० २

ये पापिष्ठ एक वैष्णवेर पक्ष हय ।
अन्य वैष्णवेरे निन्दे सेइ याय क्षय ।
सभारे शिखाय गोरचन्द्र भगवाने ।
वैष्णवेर सेवा प्रभु करिया आपने ।

प्रसाद महिमा–अ० ४

प्रभु वोले ए अन्नेर थाकुक भोजन ।
ए अन्न देखिले हय वन्ध विमोचन ।
कि रन्धन इहात कहिल किछु नय ।
ए अन्नेर गन्धेओ कृष्णेते भक्ति हय ।

श्रीगदाधर प्रति–अ० १

प्रभु वोले ए अन्नेर गन्धेओ सर्व्वथा ।
कृष्ण-भक्ति हय इथे नाहिक अन्यथा ।

श्रीअद्वैत प्रति—

प्रभु वोले ये जन तोमार अन्न खाय ।
कृष्ण भक्ति कृष्ण सेइ पाय सर्व्वथाय ।
आचार्य्य तोमार अन्न आमार जीवन ।
तुमि खाओयाइले हय कृष्णेर भोजन ।

श्रीभागवत—म० २१

अचिन्तच-

भागवते अचिन्त्य ईश्वर वुद्धि यार ।
से जानये भागवत अर्थ भक्ति सार ।

देवानन्द के सम्वन्ध में–म० २१

कोपे वोले प्रभु वेटा कि अर्थ वाखाने ।
भागवत अर्थ कोन जन्मेओ ना जाने ।
ए वेटार भागवते कोन अधिकार ।
ग्रन्थरूपे भागवत कृष्ण अवतार ।

सव पुरुषार्थ भक्ति भागवते हय।
प्रेमरूप भागवत चारि वेदे कय॥
चारि वेद दधि भागवत नवनीत।
मथिलेन शुके खाइलेन परीक्षित।
मोर प्रिय शुक से जानेन भागवत।
भागवते कहे मोर तत्त्व अभिमत।
मुत्रि मोर दास आर ग्रन्थ भागवते।
यार भेद आछे तार नाश भालमते॥

देवानन्द के प्रति—

शुन विप्र भागवते एइ वाखानिवा।
भक्ति विनु मुखे आर किछु ना आनिवा।
आद्य मध्ये अन्ते भागवते एइ कय।
विष्णु–भक्ति नित्य सिद्ध अक्षय अव्यय॥

भक्तिमय–अ० २

भागवत-शास्त्रे से भक्तिर तत्त्व कहे।
तेत्रि भागवत सम कोन शास्त्र नहे।
भक्ति योगे भागवत व्यासेर जिह्वाय।
स्फूर्त्ति से हइल मात्र कृष्णेर कृपाय।

पाठ की विधि–

अज्ञ हइ भागवते ये लय शरण।
भागवत अर्थ तार हय दरशन॥
प्रेममय भागवत कृष्णेर श्रीअङ्ग।

याहाते कहेन यत गोप्य कृष्णरङ्ग ।

देवानन्द के प्रति–

आद्य-मध्ये-अवसाने तुमि भागवते ।
भक्ति योग मात्र वाखानिह सर्व्वमते ।।
तवे आर तोमार नहिव अपराध ।।
सेइ क्षणे चित्तवृत्ते पाइवे प्रसाद ।
सकल शास्त्रेइ मात्र कृष्णभक्ति कय ।।
विशेषतः भागवत भक्ति-रसमय ।
चल तुमि याह अध्यापना कर गिया ।
कृष्ण भक्ति अमृत सभारे वुझाइया ।

श्रीईश्वर तत्त्व—आ० ७

प्रभु वोले कृष्ण पोष्ठा करिव पोषण ।
ये ये माता कृष्ण एइ दिलेन सम्वल ।
इहा भाङ्गाइया व्यय करह सकल ।

श्रीहरिदास की उक्ति—आ० १४

वलिते लागिला तारे मधुर उत्तर ।
शुन वाप सभार एकइ ईश्वर ।
नाम मात्र भेद करे हिन्दुरे यवने ।
परमार्थे एक कहे कोराणे पुराणे ।
एक शुद्ध नित्य वस्तु अखण्ड अव्यय ।
परिपूर्ण हैया वैसे सभार हृदय ।

सेइ प्रभु यारे येन लओयायेन मन।
सेइ मत कर्म्म करे सकल भुवन।
से प्रभुर नाम शुन सकल जगते,
वलेन सकल मात्र निज शास्त्र मते॥

श्रीविग्रह—म० २०

श्रीमुरारि प्रति—

वलिते प्रभुर हइल ईश्वर आवेश।
दन्त कड़मड़ करे वलये विशेष॥
सन्न्यासी प्रकाशानन्द वसये काशीते।
मोरे खण्ड खण्ड करे वेटा भालमते।
पड़ाये वेदान्त मोर विग्रह ना माने।
कुष्ठ कराइलु अङ्गे तवु नाहि जाने।
अनन्त व्रह्माण्ड मोर ये अङ्गेते वैसे।
ताहा मिथ्या वोले वेटा केमन साहसे॥
सत्य कहों मुरारि आमार तुमि दास!
ये ना माने मोर अङ्ग सेइ याय नाश॥

जीवतत्त्व—म० १

माता प्रति—

शुन शुन माता जीवतत्त्वेर संस्थान।
सात मासे जीवेर गर्भ्भेते हय ज्ञान।
तखन से सङरिया करे अनुताप।
स्तुति करे कृष्णेरे छाड़िया घनश्वास।

रक्ष कृष्ण जगत जीवन प्राणनाथ ।
तोमा वइ जीव दुःख निवेदिब कात ।।
ये करयो वन्दी प्रभु छाड़ाये सेइ से ।
सहज मृतेरे प्रभु माया कर किसे ।।
मिथ्या धन पुत्र रसे वञ्चिलु जनम ।
ना भजिनु तोर दुइ अमूल्य चरण ।।
ये पुत्र पोषण कैलु अशेष विधर्म्मे ।
कोथा वा से सव गेल मोर एइ कर्म्मे ।।
एखन ए दुःखे मोर के करिवे पार ।
तुमि से एखन वन्धु करिवा उद्धार ।
एतेके जानिलु सत्य तोमार चरण ।
रक्ष प्रभु कृष्ण ! तोर लइलु शरण ।
तुमि हेन कल्पतरु ठाकुर छाड़िया ।
भुलिलाम असत् पथे प्रमत्त हइया ।
उचित ताहार एइ शास्ति योग्य हय ।
करिला त एवे कृपा कर महाशय ।।
एइ कृपा आर येन तोमा ना पासरि
येखाने सेखाने केने जन्मिया ना मरि ।
येखाने तोमार नाइ यशेर प्रचार ।
यथा नाइ वैष्णवजनेर अवतार ।।
येखाने तोमार महा महोत्सव नाइ ।
इन्द्रलोक हइलेओ ताहा नाहि चाइ ।

गर्व्भवास दुःख एहो मोर भाल ।
यदि तोर स्मृति मोर रहे सर्व्वकाल ।
तोर पादपद्मेर स्मरण नाहि यथा ।
हेन कृपा कर प्रभु ना फेलिव तथा ।
एइ मत दुःख प्रभु कोटी कोटी जन्म ।
पाइलु विस्तर प्रभु सव मोर कर्म्म ।
से दुःख विपद प्रभु रहु वार वार ।
यदि तोर स्मृति थाके सर्व्व वेद सार ।
हेन कर एवे कृष्ण दास्य योग दिया ।
चरणे राखह दासी नन्दन करिया ॥
वारेक करह यदि ए दुःखेर पार ।
तवे तोमा वइ प्रभु ना गाइमु आर ॥
एइमत गर्व्भवासे पोड़े अनुक्षण ।
ताहे भालवासे कृष्ण स्मृतिर कारण ।
स्तवेर प्रभाव गर्व्भे दुःख नाहि पाय ।
काले पड़े भूमिते आपन अनिच्छाय ॥
शुन शुन माता जीव तत्त्वेर संस्थान ।
भूमिते पड़िले मात्र हय अगे यान ।
मूर्च्छागत हय क्षणे क्षणे काँदे श्वासे ।
कहिते ना पारे दुःख सागरेते भासे ।
कृष्णेर सेवक जीव कृष्णेर मायाय ।
कृष्ण ना भजिले एइ मत दुःख पाय ।

कथोदिने कालवशे हय वुद्धिज्ञान ।
इथे ये भजये कृष्ण सेइ भाग्यवान ।।
अन्यथा ना भजे कृष्ण दुष्ट सङ्ग करे ।
पुनः सेइमत माया पाशे डुवि मरे ।
अनायासे मरण जीवन दुःख विने ।
कृष्णे भजिले से हय कृष्णेर स्मरणे ।
एतेके भजह कृष्ण साधु सङ्ग करि ।
मने चिन्त कृष्ण माता मुखे वोल हरि ।
भक्तिहीन कर्म्मे कोन फल नाहि पाय ।
सेइ कर्म्म भक्तिहीन परहिंसा याय ।।

जीव

अस्वतन्त्र–म० २७

ये कर्म्म करये प्रभु सेइ हय वेद ।
ताइ गाइ सर्व्व वेदे छाड़ि सर्व्व भेद ।

माता प्रति–

शुन माता ईश्वरेर अधीन संसार ।
स्वतन्त्र हइते शक्ति नाहिक काहार ।
संयोग वियोग यत करे सेइ नाथ ।
ताँन इच्छा वुझिवारे शक्ति आछे कात ।

भवितव्य–आ० १२

माता प्रति–

प्रभु वोले माता दुःख भाव कि कारणे ।

भवितव्य ये आछे से घुचिबे केमने ।

संसार अनित्य—

एइ मत काल गति केहो कारो नहे ।
अतएव संसार अनित्य वेदे कहे ।
ईश्वरेर अधीन से सकल संसार ।
संयोग वियोग के करिते पारे आर ।
अतएव ये हइल ईश्वर इच्छाय ।
हइल से कार्य्य आर दुःख केने ताय ।

भक्तगण प्रति–अ० २

भोक्तव्य अदृष्टे थाके ये दिने लिखन ।
अरण्येओ आसि मिले अवश्य तखन ।
प्रभु यारे ये दिने वा ना लिखे आहार ।
राजपुत्र हउ तवु उपवास तार ।
थाकिलेओ खाइते ना पारे आज्ञा विने ।
अकस्मात् कोन्दल करये कारो सने ।
क्रोध करि वोले मुञि ना खाइमु भात ॥
दिव्य करि रहे निज शिरे दिये हात ।
अथवा सकल द्रव्य हैले विद्यमान ।
आचम्विते देहे ज्वर हैल अधिष्ठान ।
ज्वर वेदनाय कोथा थाकिल भक्षण ।
अतएव ईश्वरेर इच्छा से कारण ॥
त्रिभुवने कृष्ण दियाछेन अन्न छत्र ।

ईश्वरेर इच्छा थाके मिलिव सर्व्वत्र ।
आपने ईश्वर सर्व्व जनेरे शिखाय।
इहाते विश्वास यार सेइ सुख पाय ।
येते मते केने कोटि यत्न नाहि करे ।
ईश्वरेर इच्छा हैले सेइ फल धरे ।

श्रीगौरतत्त्व—म० ८

श्रीकृष्णभाव—

कलिकाले मुञि कृष्ण मुञि नारायण ।
मुञि सेइ भगवान देवकी नन्दन ।
अनन्त ब्रह्माण्ड कोटि माझे मुइ नाथ ।
यत गाओ सेइ मुञि तोरा मोर दास ।

मातृभाव— म० १८

मातृभावे विश्वम्भर सभारे धरिया !
स्तन पान करायेन परम स्निग्ध हैया ॥

अक्रूरभाव—

मथुराय चल नन्द राम कृष्ण लइया ।
धर्म्म सुख राजमहोत्सव देखि गिया ।

श्रीवराह भाव—

शूकर शूकर वलि प्रभु चलि याय ।

श्रीवलराम भाव—

मद आन मद आन वलि घन डाके ।

झाट देह मोरे हल मुषल मुद्गर ।

श्रीरुक्मिणी भावः—

रुक्मिणीर भावे मग्न हइल निर्भर ।

श्रीगोपीभाव—-

कोनदिन गोपीभावे करेन रोदन ।

भक्तवात्सल्य—म० २५

पुत्रशोक ना जानिल ये मोहार प्रेमे ।
हेन सव सङ्ग मुञि छाड़िमु केमने ॥

श्रीगौरतत्त्व—म० २५

श्रीवास प्रति—

प्रभु वोले शुन शुन श्रीवास पण्डित ।
तुमित सकल जान संहार चरित ।
ए सव संसार दुःख तोमार कि दाय ।
ये तोमारे देखे सेहो कभु नाहि पाय ।
आमि नित्यानन्द दुइ नन्दन तोमार ।
चित्ते किछु तुमि व्यथा ना भाविह आर ।

तीर्थ यात्री सन्नासी प्रति—आ० ४

हासिया कहेन प्रभु आमि ये गोयाल ।
आर जन्मे एइरूपे नन्द-गृहे आमि ।
देखा दिनु तोमारे ना स्मर ताहा तुमि ।

श्रीधर प्रति–आ० १०

श्रीधर बोलेन विप्र तुमि विष्णु अंश।
प्रभु बोले ना जानिला आमि गोप वंश।

श्रीवास प्रति–म० २

काहारे वा पूजिस करिस कार ध्यान।
याहारे पूजिस तारे देख विद्यमान।
डाकिया बोलये प्रभु आरे श्रीनिवास।
एतदिन ना जानिस आमार प्रकाश।
तोर उच्च संकीर्त्तने नाड़ार हुङ्कारे।
छाड़िया वैकुण्ठ आइनु सर्व्व परिवारे।

यज्ञ वराह—म० २

श्रीमुरारि गुप्त प्रति–

शुनह मुरारि गुप्त कहि मत सार।
वेद गुह्य कहि एइ तोमार गोचर।
आमि यज्ञ वराह सकल वेद सार।
आमि से करिनु पूर्व्वे पृथिवी उद्धार।
सङ्कीर्त्तन आरम्भे मोहार अवतार।
भक्तजन लागि दुष्ट करिमु उद्धार।

युगावतार म० २६

भक्तगण प्रति–

युगे युगे अनेक आमार अवतार।

से सकले सङ्गी सवे हयेछे आमार।
एइ मत आरो आछे दुइ अवतार।
कीर्त्तन-आनन्द रूप हइवे आमार।
ताहातेओ तुमि सव एइ मत रङ्गे।
कीर्त्तन करिवा महासुखे आमा सङ्ग।

अद्वितीय तत्त्व अ० २

दानी प्रति-

प्रभु कहे जगते आमार केह नय।
आमिह काहार नहि कहिल निश्चय॥
एक आमि दुइ नहि सकल आमार।
कहिते नयने वहे अविरत धार॥

श्रीदत्तात्रेय भाव-आर ६

माता प्रति-

प्रभु वले माता तुमि वड़ शिशुमति।
अपवित्र स्थाने कभु नहे मोर स्थिति।
यथा मोर स्थिति सेइ सर्व्व पूण्य स्थान।
गङ्गा आदि सर्व्व तीर्थ तहि अधिष्ठान॥
आमार से काल्पनिक शुचि वा अशुचि।
स्रष्टार कि दोष आछे मने भाव वुझि॥
लोक वेद मते यदि अशुद्ध वा हय।
आमि परशिलेओ कि अशुद्धता रय।

ए सव हाँड़िते मूले नाहिक दूषण ।
तुमि याते विष्णु लागि करिला रन्धन ।।
विष्णुर रन्धन स्थाली कभु दुष्ट नय ।
से हाँड़ि परशे आर स्थान शुद्ध हय ।
एतेके आमार वास नहे मन्द स्थान ।
सभार शुद्धता मोर परश कारणे ।

श्रीसार्व्वभौम प्रति–अ० ३

प्रभु वोले सार्व्वभौम कि तोर विचार ।
सन्न्यासे कि नाहिक आमार अधिकार ।।
सन्न्यासी कि आमि हेन तोर चित्ते लय ।
तोर लागि एथा मुञि हइलु उदय ।।
वहु जन्म मोर प्रेमे तेजिलि जीवन ।
अतएव तोरे मुञि दिनु दरशन ।
प्रभु वोले शुन सार्व्वभौम महाशय ।
सन्न्यासी आमारे नाहि जानह निश्चय ।
कृष्णेर विरहे मुञि विक्षिप्त हइया ।
वाहिर हैनु शिखा सूत्र मुड़ाइया ।।
सन्न्यासी करिया ज्ञान छाड़ मोर प्रति ।
प्रभु हइ निज दासे मोहे हेनमते ।
ए मायाय दासे प्रभु जानिवे केमते ।
यदि तिँहो नाहि जानायेन आपनारे ।
तवे कार शक्ति आछे जानिते ताँहारे ।।

ना जानिया सेवके यतेक कथा कय ।
ताहातेओ ईश्वरेर महा प्रीति हय ।
सर्व्वकाल भृत्य सङ्गे प्रभु क्रीया करे ।
सेवकेर निमित्ते आपने अवतारे ।
येमते सेवके भजे कृष्णेर चरणे ।
कृष्ण सेइ मत दासे भजेन आपने ।
एइ तान स्वभाव श्रीभक्त वत्सल ।
इहा ताने निवारिते कार आछे वल ।

योगक्षेम वहन अ० ५

ये ये जने चिन्ते मोरे अनन्य हइया ।
तारे भक्ष्य देङ मुञि माथाय वहिया ॥
येइ मोरे चिन्ते नाहि याय कारो द्वारे ,
आपने आसिया सर्व्व सिद्धि मिले तारे ॥

श्रीनित्यानन्द तत्त्व—अ० २

मोर देह हैते नित्यानन्देर देह वड़ ।
सत्य सत्य सभारे कहिलु एइ दढ़ ।
नित्यानन्द स्थाने यार हय अपराध ।
मोर दोष नाहि तारे प्रेमभक्ति वाध ॥
नित्यानन्दे याहार तिलेक द्वेष रहे ॥
भक्त हइलेओ से आमार प्रिय नहे ।

श्रीराघव प्रति—अ० ५

येइ आमि सेइ नित्यानन्द भेद नाई ।
तोमार घरेइ सब जानिबा एथाइ ॥
राघव तोमारे आमि निज गोप्य कहि ।
आमार द्वितीय नाहि नित्यानन्द वहि ॥
पतितेर त्राण लागि ताँर अवतारे (अ० ६)
ताहा हैते सर्व्व जीव पाइवे उद्धार ।
ताहार आचार विधि निषेधेर पार ।
ताहारे वुझिते शक्ति आछये काहार ।
परमार्थे नित्यानन्द परम योगेन्द्र । (अ०६)
याँरे कहि आदि शेष धरणीधरेन्द्र ।

भक्तगण प्रति–

नित्यानन्द प्रसादे से हय विष्णु भक्ति ।
जानिह कृष्णेर नित्यानन्द पूर्ण-शक्ति ।
कृष्णेर द्वितीय नित्यानन्द वहि नाइ ।
सखी सखा शयन भूषण वन्धु भाइ ॥

श्रीनित्यानन्द प्रति–म० ४

वुझिलाम ईश्वरेर तुमि पूर्ण शक्ति ।
तोमा भजिले से जीव पाय कृष्णभक्ति ।
तुमि कर चतुर्द्दश भुवन पवित्र ।
अचिन्त्य अगम्य गूढ़ तोमार चरित्र ।
तोमा लखिवेक हेन आछे कोन जन ।
मूर्त्तिमन्त तुमि कृष्ण प्रेमभक्ति धन ।

तिलार्द्ध तोमार सङ्ग ये जनार हय ।।
कोटि पाप थाकिलेओ तार मन्द नय ।

नित्यानन्द प्रति—म० ३

नामरूप तुमि नित्यानन्द मूर्त्तिमन्त ।
श्रीवैष्णव धाम तुमि ईश्वर अनन्त ।।
यत किछु तोमार श्रीअङ्गे अलङ्कार ।
सत्य सत्य सत्य भक्तियोग अवतार !
स्वर्ण मुक्ता रूपा काँसा रुद्राक्षादि-रूपे ।
नवविधा भक्ति धरियाछ निज सुखे ।।
नीच जाति पतित अधम यत जन ।
तोमा हैते सभार हैल विमोचन ।
ये भक्ति दियाछ तुमि वणिक सभारे ।
ताहा वाञ्छे सुर सिद्ध मुनि योगेश्वरे ।।
स्वतन्त्र करिया वेदे ये कृष्णेरे कहे ।
हेन कृष्ण पार तुमि करिते विक्रये ।
तोमार महिमा जानिवार शक्ति कार ।
मूर्त्तिमन्त तुमि कृष्ण-रस अवतार ।
वाह्य नाहि जान तुमि संकीर्त्तन सुखे ।
अहर्निश कृष्ण गुण तोमार श्रीमुखे ।।
कृष्णचन्द्र तोमार हृदये निरन्तर ।
तोमार विग्रह कृष्ण-विलासेर घर ।।
अतएव तोमारे ये जन प्रीति करे ।

सत्य सत्य कृष्ण कभु ना छाड़ेन तारे ।

नित्यानन्द प्रति—अ० ५

प्रभु वले शुन नित्यानन्द महामति ।
सत्वरे चलह तुमि नवद्वीप प्रति ।।
प्रतिज्ञा करियाछ आमि निज मुखे ।
मूर्ख नीच दरिद्र भासाव प्रेम-सुखे ।।
तुमिओ थाकिले यदि मुनिधर्म्म करि ।
आपन उद्दाम भाव सव परिहरि ।।
तवे मूर्ख नीच यत पतित संहार ।
वोल देखि आर केवा करिव उद्धार ।।
भक्ति रस दाता तुमि तुमि सम्वरिले ।
तवे अवतार किवा निमित्ते करिले ।।
एतेके आमार वाक्य यदि सत्य चाओ ।
तवे अविलम्वे तुमि गौड़देशे याओ ।।
मूर्ख नीच पतित दुःखित यत जन ।
भक्ति दिया कर गिया सभार मोचन ।

श्रीअद्वैत तत्त्व—म० १६

अद्वैतेर वाक्ये महा क्रुद्ध विश्वम्भर ।
अद्वैत महिमा क्रोधे वोलये विस्तर ।।
सकल संसार तुमि करिया संहार ।
तथापि चित्ते नाहि वास प्रतिकार ।।

संहारेर अवशेष सवे आछि आमि ।
मोरे संहारिया तवे सुखे थाक तुमि ।
तपस्वी सन्न्यासी योगी ज्ञानी ख्याति यार ।
काहारे ना कर तुमि शूलेते संहार ।

श्रीअद्वैत प्रति—अ० ९

प्रभु वले शुन शुन आचार्य्य गोसाञि ।
कलियुगे एमन विरक्त आर नाई ॥
राज्य सुख छाड़ि काँथा करङ्ग लइया ।
मथुराय थाकेन कृष्णेर नाम लैया ।
अमायाय कृष्ण भक्ति देह ए दोँहारे ।
जन्म जन्म येन आर कृष्ण ना पासरे ।
भक्तिर भाण्डारी तुमि विने भक्ति दिले ।
कृष्ण भक्ति कृष्ण भक्त कृष्णकारे मिले ?
अद्वैतेर प्रसादे से हय कृष्ण भक्ति ।
जानिह अद्वैत कृष्णेर पूर्ण शक्ति ॥
अद्वैत वलये यदि भक्ति विलाइवा ।
स्त्री शूद्र आदि यत मुर्खेरे से दिवा ।

श्रीअद्वैत प्रति–अ० ९

धन्य हइलाम आमि देखिया तोमारे ।
तुमि कृपा करिले से कृष्ण नाम स्फुरे ॥
तुमि से करिते पार भव वन्ध नाश ।
तोमार हृदये कृष्ण सर्व्वथा प्रकाश ॥

श्रीहरिदास तत्त्व–आ० १४

हरिदास नृत्ये कृष्ण नाचेन आपने ।
ब्रह्माण्ड पवित्र हय ओ नृत्य दर्शने ।
उहार ये योग्य पद हरिदास नाम ।
निरवधि कृष्णचन्द्र हृदये उहान ।
सर्व्वभूत वत्सल सभार उपकारी ।
ईश्वरेर सङ्गे प्रति जन्म अवतरि ।
उभि से निरपराध विष्णु वैष्णवेते ।
स्वप्नेओ उहान दृष्टि ना याय विपथे ॥
तिलार्द्ध उहान सङ्ग ये जीवेर हय ।
से अवश्य पाय कृष्ण-पाद–पद्माश्रय ॥
ब्रह्मा शिव हरिदास हेन भक्त सङ्ग ।
निरवधि करिते चित्तेर वड़ रङ्ग ॥
जाति कुल सव निरर्थक वुझाइते ।
जन्मिलेन नीच कुले प्रभुर आज्ञाते ।
अधम कुलेते यदि विष्णु भक्त हय ।
तथापि सेइ से पूज्य सर्व्व शास्त्रे कय ॥
उत्तम कुलेते जन्म श्रीकृष्ण ना भजे ।
कुले तार कि करिवे नरकेते मजे ।
एइ सव वेद वाक्य साक्षी देखाइते ।
जन्मिलेन हरिदास अधम कुलेते ।

तत्त्व—म० १७

एइ मत कृष्ण महाराज राजेश्वर।
कर्त्ता हर्त्ता ब्रह्मा शिव याहार किङ्कर।
सृष्टि आदि करितेओ दियाछेन शक्ति।
शास्ति करिलेओ केह ना करे द्विरुक्ति।
रमादि भवादिओ कृष्णेर दण्ड पाय।
दोषे प्रभु सेवकेर क्षमये सदाय॥
अपराध देखि कृष्ण यार शास्ति करे।
जन्म जन्म दास सेइ बलिल तोमारे।

**

** श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम् **

—

विज्ञप्तिः

—

परम करुण श्रीश्रीगौरगदाधर देव की प्रेरणासे- श्रीचैतन्य सूक्ति सुधाकर नामक अपूर्व ग्रन्थ रत्न का प्रकाशन हुआ, इस में श्रीचैतन्य महाप्रभु कथित ११५ उपदेशों का संग्रह है, यह संग्रह श्रीचैतन्य चरितामृत एवं श्रीचैतन्य भागवत से हुआ है।

प्राणिनिवहको चिर सुखी करने के लिए

उत्तमाभक्ति रूप भागवत धर्मका उपदेश श्री प्रभुने किया है, इस में प्राणी मात्र ही अधिकारी है, भोजन की भाँति यह धर्मसवके ही अवलम्वनीय तथा तृप्तिद भी है, उपदेशावली को अवलोकन करने से उस की वास्तविकता का अनुभव स्वतः ही होता है ॥

श्रीकृष्ण चैतन्य देव के सम्वन्ध में महानुभावों का अनुभव निम्नोक्त प्रकार है-कवि कर्णपूर की उक्ति मे-

यः श्रीवृन्दावनभुवि पुरा सच्चिदानन्दसान्द्रो ।
गौराङ्गीभिः सदृशरुचिभिः श्यामधामाननर्त्त ॥
तासांशश्वद् दृढ़तर परीरम्भसम्भेदतः किं ।
गौराङ्गः सन् जयति स नवद्वीपमालम्बमानः ॥

सच्चिदानन्दमय धनश्यामलकान्ति श्रीकृष्ण, पुराकाल में वृन्दावन में समान रुचि सम्पन्न गौराङ्गी रमणी वृन्द के साथ नृत्य किए थे, क्या आप ही उस गौर कान्ति गोप सुन्दरीयों के निरवच्छिन्न दृढ़तर आलिङ्गन जनित अङ्ग मर्दन से श्रीगौराङ्ग होकर श्रीधाम नवद्वीप में विराजित हैं ?

श्रीकृष्णदास कविराज महाशय की उक्ति में—

वन्दे गुरुनीश भक्तानीशमीशावतारकान् ।
तत् प्रकाशांश्च तच्छक्तीः कृष्ण चैतन्य सञ्ज्ञकम् ।

मैं,—दीक्षागुरु, शिक्षागुरु ईश्वर का भक्त,

ईश्वरावतार, ईश्वरका, प्रकाश, ईश्वर की शक्ति, एवं श्रीकृष्ण चैतन्य संज्ञक परमेश्वर की वन्दना करता हूँ ॥

वन्दे श्रीकृष्ण चैतन्य नित्यानन्दौ सहोदितौ ।
गौड़ोदये पुष्पवन्तो चित्रौ शन्दौ तमोनुदौ ॥

गौड़देशरूप उदय गिरि में एक ही समय में सूर्य्यचन्द्र की भाँति उदित मङ्गलदाता अज्ञान तमोनाशक आश्चर्य्य स्वरूप श्रीकृष्ण चैतन्य एवं श्रीनित्यानन्द चन्द्र की मैं वन्दना करता हूं ।

यदद्वैतं ब्रह्मोपनिषदि तदप्यस्य तनुभा ।
य आत्मान्तर्य्यामी पुरुष इति सोऽस्यांशविभवः ।
षड़ैश्वर्यैः पूर्णो य इह भगवान स स्वयमयं ।
न चैतन्यात् कृष्णाज्जगति परतत्त्वं परमिह ॥

उपनिषद् में जो अद्वैत ब्रह्म रूप में कथित हैं, आप श्रीकृष्ण चैतन्य की अङ्ग कान्ति है, योग शास्त्र में जो अन्तर्य्यामी पुरुष रूप में उक्त है, वह भी उनका अंशहै, जो षड़ैश्वर्य्य शाली पूर्ण स्वयं भगवान है वह यह श्रीकृष्ण चैतन्य है, उन से अपर परतर तत्त्व नहीं है।

अनर्पितचरीं चिरात् करुणयावतीर्णः कलौ
समर्पयितुमुन्नतोज्ज्वल रसां स्वभक्तिश्रियम् ।

हरिः पुरट सुन्दर द्युतिकदम्ब सन्दीपितः
सदा हृदय कन्दरे स्फुरतु वः शचीनन्दनः ॥

जो वस्तु वहुकाल किसी को भी नहीं दीगई है, वह निज उन्नत उज्ज्वलरस भक्ति रूप प्रेमसम्पत्ति को जन साधारण को प्रदान करने के लिए जो स्वयं ही दया कर कलिकाल में अवतीर्ण हुये हैं, जिन की अङ्ग कान्ति सुवर्ण से भी रमणीय है वह श्रीशची-नन्दन हरि तुम सव के हृदय में स्फुरित हो ।

राधा कृष्ण प्रणय विकृति ह्लादिनी शक्तिरस्मा
देकात्मानावपि भुवि पुरा देह भेदंगतौ तौ,
चैतन्याख्यं प्रकट मधुना तद्द्वयं चैक्यमाप्तं
राधाभावद्युति सुवलितं नौमि कृष्ण स्वरूपम् ॥

श्रीराधा,-श्रीकृष्णकी प्रणय विकृति, परिणति रूपा ह्लादिनी शक्ति है, एकात्मा होने पर भी अनादि काल से ही देह द्वय में विराजित हैं। अधुना इस कलिकाल में वह दोनो शरीर,-एक होकर श्रीराधिका के भाव कान्ति युक्त होकर जो श्रीचैतन्य रूप में प्रकटित हुए हैं उस श्रीकृष्ण स्वरूप को मैं प्रणाम करता हूँ ॥

श्रीराधायाः प्रणय महिमा कीदृशीवानयैवा
स्वाद्यो येनाद्भूतमधुरिमा कीदृशो वा मदीयः ।

महाविष्णुर्जगत् कर्त्ता मायया यः सृजत्यदः
तस्यावतार एवायमद्वैताचार्य ईश्वरः ॥

जो जगत् कर्त्ता महाविष्णु निज शक्तिके द्वारा इस जगत् का निम्र्माण किए हैं, उनका अवतार यह ईश्बर अदैताचार्य हैं ॥

अद्वैतं हरिणाद्वैतादाचार्य्यं भक्तिशंसनात् ।
भक्तावतारमीशं तमद्वैताचार्य्यमाश्रये ॥

श्रीहरि के साथ अभेद वशतः जिनका नाम श्रीअद्वैताचार्य है, एवं भक्ति उपदेष्ठा होने के कारण आचार्य्य हैं, आप भक्त रूप में अवतीर्ण हुये हैं, उन ईश्वरावतार अद्वैताचार्य की में शरण लेता हूँ ॥

पञ्चतत्त्वात्मकं कृष्णं भक्तरूप स्वरूपकं
भक्तावतारं भक्ताख्यं नमामि भक्तिशक्तिकम् ॥

भक्त रूप श्रीचैतन्य भक्त स्वरूप श्रीनित्यानन्द भक्तावतार श्रीअद्वैत, भक्त शक्ति श्रीगदाधर, एवं भक्त श्रीवासादि हैं, यह पञ्चतत्त्वात्मक श्रीकृष्ण को में प्रणाम करता हूँ ।

जयतां सुरतौ पङ्गोर्मम मन्दमतेर्गती,
मत् सर्वस्व पदाम्भोजौ राधामदनमोहनौ ॥

मेरे समान पङ्गु मन्दमति की जो गति हैं, जिन के चरण कमल मेरा सर्वस्व धन है, वह कृपालु श्रीश्रीराधा मदन मोहन की जय हो ॥

दीव्यद् वृन्दारण्य कल्प द्रुमाधः।
श्रीमद्रत्नागार सिंहासनस्थौ।
श्रीश्रीराधा श्रील गोविन्द देवौ
प्रेष्ठालीभिः सेव्यमानौ स्मरामि।

परम मनोहर श्रीवृन्दावन के कल्प तरुके मूल देश में अवस्थित रत्न मन्दिर मध्यस्थ रत्नसिंहासन में विराजित, प्रिय सखीगण द्वारा सेवित श्रीराधा गोविन्द देव का मैं स्मरण करता हुँ।

श्रीमान् रासरसारम्भीवंशीवट तट स्थितः
कर्षन् वेणुस्वनैर्गोपी र्गोपीनाथः श्रियेऽस्तुनः॥

जो श्रीमान् रास प्रवर्त्तक, एवं वंशीवटके तट देश में अवस्थित हैं, जो वेणुवादन के द्वारा गोपीयों को आकर्षण करते रहते हैं वह श्रीगोपीनाथ हम सव को मङ्गल प्रदान करें। श्लोकार्थ को जानने के लिए ग्रन्थकार कृत पयार उद्धृत हुआहै,—

श्रीचैतन्य कौन है ?

स्वयं भगवान् कृष्ण कृष्ण परतत्त्व
पूर्ण ज्ञान पूर्णानन्द परम महत्त्व।
नन्दसूत वलि याँरे भागवते गाइ।
सेइ कृष्ण अवतीर्ण चैतन्य गोसाञि॥

तत्त्व क्या है ?

अद्वय तत्त्व वस्तु कृष्णेर स्वरूप।

सौख्यंचास्या मदनुभवतः कीदृशं वेतिलोभा
त्तद् भावाढ्यः समजनि शचोगर्भसिन्धौहरीन्दुः ॥

श्रीराधा की प्रणय महिमा कैसी है ? एवं प्रेम के द्वारा मुझ श्रीकृष्ण का माधुर्य्य का आस्वादन वह किस प्रकार करती है, वह माधुर्य भी कैसा है ? एवं मुझ को अनुभव कर के श्री भानुनन्दिनी का जो जो सुखातिशय होता है, वह सुख भी कैसा है ? यह तीन आस्वादन के लोभ से ही श्री राधिका के भाव को अङ्गीकार कर श्री शची देवी के गर्भरूप क्षीर समुद्र में श्रीहरिरूप सुधाकर आविर्भुत हुए हैं ।

सङ्कर्षणः कारण तोयशायी
गर्भोदशायीच पयोब्धिशायी ।
शेषश्च यस्यांशकलाः स नित्या
नन्दाख्य रामः शरणं ममास्तु ॥

सङ्कर्षण कारणार्णवशायी—प्रकृति का अन्तर्य्यामी, गर्भोदशायी-ब्रह्माण्ड का अन्तर्यामी, क्षीरोद शायी, व्यष्टि का अन्तर्य्यामी, एवं अनन्त, यह सव जिन के अंश कला हैं, उन श्रीनित्यानन्द नामक राम 'बलराम' की मैं शरण लेता हूँ ।

मायातीतेब्यापि वैकुण्ठलोके
पूर्णैश्वर्ये श्री चतुर्ब्यूहमध्ये ।

रूपं यस्योद्भति सङ्कर्षणाख्यं
तं श्रीनित्यानन्दरामं प्रपद्ये ।।

सर्व व्यापक मायातीत षड़ैश्वर्य्यपूर्ण वैकुण्ठ लोक में चतुर्व्यूहके मध्य में जिनका सङ्कर्षण नामक रूप प्रकाशितहै, उन श्रीनित्यानन्द राम की में शरण लेता हूँ।।

माया भर्त्ताजाण्ड संघाश्रयाङ्गः ।
शेते साक्षात् कारणम्भोधि मध्ये ।
यस्यैकाँशः श्रीपुमानादि देवः ।
स्तं श्रीनित्यानन्द रामं प्रपद्ये ।।

जो प्रकृति भर्त्ता ' पालक है, जिनका अङ्ग ही ब्रह्माण्ड समूहका उत्पत्ति स्थानहै, जो कारणार्णव शायीहै, एवं जिनका एक अंश ही आदि पुरुष महा विष्णु हैं, उन नित्यानन्द राम की में शरण ग्रहण करता हूँ ।

यस्यांशाँशः श्रीलगर्भोदशायी
यन्नाभ्यब्जं लोक संघातनालम् ।
लोक स्रष्टुः सूतिका धाम धातु
स्तं श्रीनित्यानन्द रामं प्रपद्ये ।।

जिनका अंश का ग्रंश क्षीरोदशायी विष्णु हैं, जो सवका पालन कर्त्ता परमात्मा, पृथिवी का भर्त्ता है, अनन्त भी जिन की कला है, उन श्रीनित्यानन्द राम की मैं शरण ग्रहण करता हूँ ।

ब्रह्म आत्मा भगवान् तिन ताँर रूप ॥

कृष्ण स्वरूप क्या है ?

रसिक शेखर कृष्ण परम करुण ।
एइ दुइ हेतु हैते इच्छार उद्गम ॥

अवतार का हेतु क्या है ?

प्रेमरस निर्य्यास करिते अस्वादन
रागमार्ग भक्ति लोके करिते प्रचारण ।

राग का भजन क्या है ?

मोर पुत्र मोर सखा मोर प्राणपति ।
एइ भावे येइ मोरे करे शुद्धाभक्ति"
आपनाके बड़ माने आमारे सम हीन,
सेइ भावे हइ आमि ताहार अधीन ॥

श्रीचैतन्यतत्त्व क्या है ?

राधा कृष्ण एक आत्मा दुइ देह धरि ।
अन्योन्ये विलसे रस आस्वादन करि ॥
सेइ दुइ एकएवे चैतन्य गोसाञि
भाव आस्वादिते दोँहे हैला एकठाञि ॥

समस्त बुद्धिमान् व्यक्तियों की बुद्धिके अपर ही ईश्वर की बुद्धि विराजित है, जीव का ज्ञान सीमित परतन्त्र, शिक्षा एवं अभ्यास लब्ध है, ईश्वर का ज्ञान अपरिमित स्वतः स्फूर्त्त है, अतएव नेत्र सन्निकट वर्त्ति शरीर एवं विश्व को देखकर भी निर्माता के प्रति

अनुसन्धानात्मिका वृत्ति तो होती ही नहीं, किन्तु विद्वेष, उदासीनता ही होतीहैं, अनुसन्धान करने की वृत्ति जगने से ही मानव अपनेको एवं विश्व वासी को सुखी समृद्ध वना सकेगा, यह अनुसन्धान, वर्त्तमान युगीय धर्म विभीषिका नहीं है, यह अनुसन्धान,-मनुष्य को अन्ध स्वार्थ परायण देहेन्द्रिय लम्पट एवं धर्म व्यवसायि नहीं वनाता है, प्रत्युत विश्व स्रष्ठा के प्रति प्रीति, प्राणिमात्र के प्रति प्रीति, परस्पर हिंसा विद्वेष मत्सरता असूयादि वर्जित अवस्था को प्रदान कर मानव जीवन को सफल वनाता है।

विश्व स्रष्टाने निखिल वस्तु निकर का सृजन करने के पश्चात् निज सकल नैपुण्य प्रयोग के द्वारा जिस का निर्म्माण कर अद्भुत आनन्द लाभ किया था। वह है मानव शरीर, आनन्दित होने का कारण ही था,-सव से वृहद् वस्तु का ज्ञाता होने का साधन इस में है, वह है, ईश्वरीय अनुशासन को अवगत होकर उस पर निष्ठा के साथ चलने की वुद्धि।

किन्तु ईश्वर के भाग्य में वह सर्वथा प्रतिकूल हो गया, मानव निज जन्म भूमि का स्पर्श प्राप्तकर कामान्ध स्वार्थ परायण, मत्सरादि निखिल दुर्गुणों का आकर तो वना हीहै, साथ ही साथ ईश्वर विद्वेषी भी वन गया, सजातीय मनुष्य से रुचिकर शिक्षा

प्राप्त करने लगा, और वह जघन्य वीभत्स रसास्वादन लम्पट होगया। सत् शिक्षा देने के लिए आपने सत् साहित्य की रचना की स्वयं स परिकर अभिनय के द्वारा सत्शिक्षा के, प्रति आसक्त करने को चेष्टा भी की, किन्तु आपकी योजना विफल रही, षण्डामर्क गुरुने मानव को त्रिवर्ग में शिक्षित कर दिया, फलतः मानव उत्तम शिक्षा रूप धर्म को जीविका एवं तदुपयोगि जगगण मनो रञ्जन को चरम लक्ष्य वना लिया शास्त्राभ्यास वेश भूषादि के द्वारा मानव परिपूर्ण नट वन गया, तवं गौर हरि का आगमन हुआ हार्दिक अकपट ममत्व के द्वारा ही विश्व स्रष्टा एवं विश्ववासियों के साथ अकृत्रिम सम्वन्ध स्थापन की शिक्षा प्रदान करना ही उनका लक्ष्य था, अत राधा जिस प्रकार कृष्णानु कूल्य कारिणी है, उसको दृष्टान्त वनाकर मानव को शिक्षित करने को आप की चेष्टा रही, कारण उक्त शिक्षा से ही विश्व स्रष्टा एवं विश्व वासी चिर सुखी वन सकते हैं। अवतार होना स्वयं भगवान् होना स्वामी होना आप की पसन्द की भी वात् नहीं रही, आप भक्त भावका समादर करते थे, और अपनी स्वरूप शक्ति को भक्त राधा वनाकर उस भाव से अपने को आस्वादन करने की इच्छा की, अर्थात् भक्तवनो भगवान् मत वनो भक्त वनने से ही

जीवन में पूर्णता शान्ति आनन्द प्रभृति आते हैं, भगवान् बनने से नहीं ।।

सुप्राचीन काल की रीति थी, गुण एवं कर्म को देखकर ही महत्त्व प्रदान करना, इस नियम से ही उस समय के विद्वन्मण्डली चैतन्य देव को ही सर्व प्रथम महाप्रभु शब्द से पुरारे थे, प्रस्तुत उपदेशावली ही महाप्रभु शब्द को अलङ्कृत करके विराजित है।



हरिदासशास्त्री

श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम्

श्रीहरिदासशास्त्रि सम्पादिता ग्रन्थावली

प्रकाशितग्रन्थरत्न	प्रकाशन सहायता
१। वेदान्तदर्शनम् भागवतभाष्योपेतम्	२०·००
२। नृसिंहचतुर्द्दशी	०·५०
३। श्रीसाधनामृतचन्द्रिका	४·००
४। श्रीसाधनामृतचन्द्रिका (वङ्गलापयार)	४·५०
५। श्रीगौरगोविन्दार्च्चन पद्धति	३·५०
६। श्रीराधाकृष्णार्च्चन दीपिका	१·००
७। श्रीगोविन्दलीलामृतमूलटीकाअनुवाद (सर्ग १-४)	५·५०
८। ऐश्वर्य्यकादम्बिनी (मूल अनुवाद)	१·५०
९। संकल्पकल्पद्रुम सटीक, सानुवाद	२·००
१०। चतुःश्लोकी भाष्यम् (सानुवाद) ११। श्रीकृष्णभजनामृतम् (सानुवाद)	३·००
१२। श्री प्रेमसम्पुटः (मूल टीका अनुवाद सह)	४·००
१३। भगवद्भक्तिसार समुच्चय (सानुवाद)	३·७५
१४। भगवद्भक्तिसार समुच्चय (सानुवाद वङ्गला)	३·००
१५। ब्रजरीति चिन्तामणि (मूल, टीका, अनुवादसह,)	४·००
१६। श्रीगोविन्दवृन्दाबनम्	१·५०
१७। राधारससुधानिधि (वङ्गला)	१·७५
१८। श्रीकृष्णभक्तिरत्नप्रकाश	५·००
१९। हरिभक्तिसार संग्रह	१२·००
२०। श्रुतिस्तुतिव्याख्या	१४·००
२१। श्रीहरेकृष्णमहामन्त्र	·४०

पर पृष्ठ में—

श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम्

श्रीहरिदासशास्त्रि सम्पादिता ग्रन्थावली

प्रकाशितग्रन्थरत्न		प्रकाशन सहायता
२२ । श्रीराधारससुधानिधिः	(हिन्दी)	०·६०
२३ । धर्म संग्रहः		३·७५
२४ । श्रीचैतन्यसूक्तिसुधाकरः		४·००

प्रकाशनरतग्रन्थरत्न

१ । श्रीगोविन्दलीलामृत(५–२३ सर्ग)

२ । दशश्लोकीभाष्यम् ४ । ३ । साधनदीपिका



श्रीरूप एवं श्रीसनातन प्रति—अ० ९

प्रभु बोले भाग्यवन्त तुमि दुइ जन ।
बाहिर हइला छिण्डि संसार वन्धन ।।
विषय वन्धने वद्ध सकल संसार ।
से वन्धन हैते तुमि दुइ हैला पार ।।

अहङ्कार—अ० ११

शुन भाइ सब एइ कहि तत्त्व कथा ।
अहङ्कार ना सहेन ईश्वर सर्व्वथा ।।
ये ये गुणे मत्त हइ करे अहङ्कार ।
अवश्य ईश्वर ताहा करेन संहार ।।
फलवन्त वृक्ष आर गुणवन्त जन ।
नम्रता से ताहार स्वभाव अनुक्षण ।।
हैहय नहुष वेण नरक रावण ।
महा दिग्विजयी शुनिआछ ये ये जन ।।
वुझ देखि कार गर्व्व चुर्ण नाहि हये ।
सर्व्वदा ईश्वर अहङ्कार नाहि सये ।

निष्ठा आ० ४

श्रीमुरारी प्रति—

शुन गुप्त एइ तुमि आमार प्रसादे ।
जन्म जन्म राम दास हओ निर्व्विरोधे ।।

मर्य्यादा—म० २०